SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 10
March - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मार्च-2026

रु.20/-

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी का कल्याणोत्सव

31-03-2026

ऑटिमिट्टा

श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव

दि.25-03-2026 से दि.03-04-2026 तक

दिनांक	वार	दिन	रात
25-03-2026	बुधवार	न्यासाभिषेकम	अंकुरार्पण
26-03-2026	गुरुवार	ध्वजारोहण	शेषवाहन
27-03-2026	शुक्रवार	वेणुगानालंकार	हंसवाहन
28-03-2026	शनिवार	वटपत्रशायि अलंकार	सिंहवाहन
29-03-2026	रविवार	नवनीतकृष्णालंकार	हनुमत्सेवा
30-03-2026	सोमवार	मोहिनीसेवा	गरुड़सेवा
31-03-2026	मंगलवार	शिवधनुर्भाणालंकार	एदुर्कोलु, कल्याणोत्सव, गजवाहन
01-04-2026	बुधवार	रथ-यात्रा	...
02-04-2026	गुरुवार	कालीयमर्दनालंकार	अश्ववाहन
03-04-2026	शुक्रवार	चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३६)

तेरे वैरीलोग तेरे सामर्थ्य की निन्दा करते हुए तुझे बहुत-से न कहने योग्य वचन भी कहेंगे; उससे अधिक दुःख और क्या होगा?।

नीवे नेरवु गानी, निन्नु बंधिंचेमु मेमु
दैवमा! नीकंटे नी दासुले नेर्परुलु ।।नीवे।।

वट्टि भक्ति नीमीद वलुकु वेसि निन्नु
बट्टि तेच्चि मति लोन बेट्टुकोंटिनि
पट्टेडु तुलसि नी पादालपै बेट्टि
जट्टिकोनिरि मोक्षमु, जाणलु नी दासुलु ।।नीवे।।

नीवु निर्मिंचिनवे नीके समर्पण सेसि
सोवल नी कृपयेल्ल जूरगोंटिमि
भाविंचोक म्रोक्कु मोक्षि भारमु नीपै वेसिरि
पावनपु नी दासुले पंतपु चतुरुलु ।।नीवे।।

चेरुवुल नील्लु देच्चि चेरेडु नीपै जल्लि
वरमु वडसितिमि वलसिनट्लु
इरवै श्री वेंकटेश! इटुवंटि विद्यलने
दरि चेरि मिंचिरि, नी दासुलु पो घनुलु ।।नीवे।।

श्री वेंकटेश के भक्तों की कुशलता का विवरण दिया गया है।

वे कहते हैं कि मात्र भक्ति के सम्मोहन से, हमने तुमको हृदय में बाँधकर रखा। मुट्ठी भर 'तुलसी' दलों को तुम्हारे चरणों पर डाला, बदले में मोक्ष को पा लिया! देखो, कितने चतुर हैं ये तेरे भक्त?

तुम्हारी वस्तुओं को तुम्हीं को समर्पित कर, बदले में तुम्हारी अपार कृपा के योग्य बन जाते हैं हम! एक नमस्कार करते हैं। हमारा पूरा भार तुम्हीं पर डाल देते हैं। देखो, हमारी चालाकी!

तालाब से हथेली मात्र पानी ला, तुम पर छिडकते हैं तथा मुँहमाँगे वरदान तुम से पाते हैं। देखो! कितने चतुर हैं हम। अब तुम्हारे पास आ गये हैं। अब तो मानो कि तुम्हारे भक्त तुम से भी सयाने हैं।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण

♦ 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।

♦ 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/–.

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ(EMO), भारतीय डाकघर(IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।

♦ चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।

♦ 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।

♦ अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।

♦ अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।

♦ सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-56 मार्च-2026 अंक-10

विषयसूची

होली	डॉ.जी.शेक षा वली	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	11
उगादि पर्व का वैशिष्ट्य	डॉ.एस.हरि	15
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	19
मत्स्यजयंती	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	23
श्री कूरेश विरचित श्रीस्तव	डॉ.के.सुधाकर राव	28
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	31
अयोध्या के प्रभु श्रीराम	डॉ.एच.एन.गौरीराव	34
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	39
सात सौ वर्षों की कृपा : श्री राघवेंद्र स्वामी की जीवंत उपस्थिति	श्रीमती मैथिली राव	42
मार्च महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - कौशल की चोरी नहीं होती	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - श्रीराम और सुग्रीव की मैत्री	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 44		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - editorsapthagiri@gmail.com

मुखचित्र - श्री सीतादेवी सहित श्री कोदंडरामस्वामी, ऑटिमिट्टा।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री बालाजी के साथ अन्नमय्या का वर्णचित्र।

गौरव संपादक
श्री एम.रविचंद्रा, I.A.S.
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D.,
P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

श्रीराम : धर्म के साकार मूर्ति

भारतीय संस्कृति अनेक पर्व दिनों से भरपूर संपदा का केंद्र है। जितने पर्व भारतभर में मनाये जाते हैं, ये केवल रूढ़ि मात्र के लिए या नाम मात्र के लिए नहीं होते, बल्कि अपने जीवन शैली में बदलाव या जीवन को सुधारने के लिए, एक अवसर पाकर मनाये जाते हैं। जितने भी पर्व क्यों न मनाये जायें, लेकिन 'श्रीरामनवमी' पर्व की विशिष्टता अनोखी है। यह पर्व अयोध्याधिपति श्रीराम के जन्म दिवस के संदर्भ में मनाया जाता है। इतना ही नहीं, धर्म क्या होता है? 'आदर्श जीवन कैसे जीना होता है?' जैसे प्रश्नों का समाधान, दृष्टांत पूर्वक समझाने का यह पर्व दिन होता है। इसीलिए श्रीराम को धर्म का साकार मूर्ति कहा जाता है - 'रामो विग्रहवान धर्मः।'

बेझिझक यह साबित किया जा सकता है कि श्रीराम, राजा से भी ज्यादा एक आदर्शपुत्र, आदर्शपति, सहोदर तथा मित्र के रूप में प्रकीर्तित हुए। अपने पिता को दिए वचन से बद्ध होकर, राज्य को त्यागकर, वनवास को जिस भांति श्रीराम ने अपनाया, वे सभी उनकी त्यागबुद्धि एवं सत्यनिष्ठता के गुण हैं जो आधुनिक जीवन शैली में अनुसरण करने के लिए योग्य साबित होते हैं। जब अधिकार, संपदा, स्वार्थपरता तांडव कर रहे थे, तब श्रीराम ने 'धर्मो रक्षति रक्षितः' सूचित सत्य को अपने जीवन के द्वारा साबित करके दिखाया। रामायण मात्र इतिहास नहीं है, वह जीवन शास्त्र है। इसका हर पात्र जीवन का बोधक है। सीता माँ की सहनशीलता, लक्ष्मण-शत्रुघ्न की सेवातत्परता, हनुमान की भक्ति भावना, भरत की त्यागशीलता, सर्वकाल-सर्वावस्था में मानव जाति को जीवन जीने की शैली दिखाती हैं। इसीलिए श्रीराम की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ केवल मंदिरों तक सीमित नहीं रह गई, वे भक्तों के हृदय मंदिरों में भी चिरस्थाई रूप धारण कर गई हैं। इसलिए हे पाठक!, इस पर्व को केवल पूजा-पा करने व्रत रखने आदि तक सीमित न करके, श्रीराम के आदर्श जीवन को हमारे अनेक दैनंदिन जीवन में भी अमल करने का संकल्प हम ले सकते हैं। आईए... सत्य, न्याय, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे अमूल्य गुणों का पुनरुद्धरण करते हुए अपने समाज में धर्मज्योति का प्रज्वलन करेंगे। 'श्रीरामचंद्र परब्रह्मणे नमः' - इतना ही कहकर हम श्रीराम के सामने नतमस्तक होकर नमन प्रस्तुत कर सकते हैं।

इसी महीने में चैत्र का आगमन होता है और इसी मास में तेलुगु भाषी 'युगादि' या 'उगादि' बड़े हर्षोल्लास के साथ सांप्रदायिकता पूर्वक अपना अतिमुख्य पर्व मनाते हैं। इसी पर्व से हम साठ वर्षीय चक्र में से, चालीसवें वर्ष 'पराभव' नामक संवत्सर में प्रवेश करते हैं। इसके पहले के 'विश्वावसु' में जितने अच्छे एवं रोचक पल हमने बिताये, उन सबका स्मरण करते हुए, आगामी नये वत्सर में हमारे उत्थान व सत्कर्म निविहन रूप से प्रकट हों, इस आकांक्षा के साथ देवदेव के सामने प्रणाम प्रस्तुत करने आइए, हम साथ चलेंगे।

'श्रीमान ताल्लपाका अन्नमाचार्य' जो 32,000 संकीर्तनों के रचयिता हैं, जिनको 'पदकविता पितामह' एवं 'द्राविडागम सार्वभौम' कहा जाता है, उनका 523वीं वर्द्धंति, इसी महीने फाल्गुन बहुल द्वादशी के दिन तिरुपति एवं अन्नमय्या के जन्मस्थल कडपा जिले के ताल्लपाका गाँव में, तिरुमल तिरुपति देवस्थान के द्वारा बडे वैभव के साथ वर्धंति मनायी जायेगी। इस संदर्भ में हम भी उस कवि के संकीर्तनों को गाकर उनका सम्मान बढ़ा सकते हैं। तिरुमल अनेकानेक पुण्यतीर्थों का पुंज है। इनमें अतिमुख्य एवं महिमान्वित तीर्थ 'कुमारधारातीर्थ' है। वर्ष में एक बार फाल्गुन महीने के पूर्णिमा के दिन इस तीर्थ का 'कुमारधारा तीर्थ मुक्कोटि' पर्व मनाया जाता है। इस दिन को, प्रकृति के सौंदर्य का आस्वादन करते हुए कुमारधारा तीर्थ में पवित्र स्नान करने की भक्तों में परिपाटि है।

उपर्युक्त पर्वों के साथ-साथ, लक्ष्मी जयंती, मत्स्य जयंती, होली, धर्मराजदशमी, जैसे पर्व, तिरुपति के श्री कोदंडरामस्वामी के ब्रह्मोत्सव, वाल्मीकिपुरम् के श्री पट्टाभिरामस्वामी ब्रह्मोत्सव, ओंटिमिट्टा श्री कोदंडराम स्वामी के ब्रह्मोत्सव, तिरुमल के श्रीहरि के वसंतोत्सव आदि भी इसी महीने में मनाना, इस मास की विशिष्टता निखारती है।

आइए... हे भक्तगण... इन पर्वों को श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनायेंगे तथा इन पर्वों से संबद्ध देवताओं का कृपा-कटाक्ष प्राप्त करेंगे... हमारे संग चलिए...

होली

- डॉ.जी.शेक षा वली

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।''

भगवद्गीता के चौथे अध्याय के आठवें श्लोक में, श्रीकृष्ण अर्जुन से कहा है कि - ''जब जब भूलोक में धर्म नष्ठ होकर और अधर्म बढ़ जाता है तब-तब मैं दुष्टों का संहार कर शिष्ट जनों की रक्षा और धर्म संस्थापना के लिए मैं स्वयं युग-युग में प्रकट होता हूँ।''

इस तथ्य के अनुसार, कृतयुग में श्री महाविष्णु, दशावतारों में चौथा अवतार श्री नरसिंह-अवतार में श्री महाविष्णु प्रकट होकर राक्षस राजा हिरण्यकश्यप और उनकी बहन होलिका राक्षसी का अंत कर, भक्त प्रह्लाद और शिष्ट ऋषि-मुनियों की रक्षा की है।

यह प्राचीन भारत के हिंदुओं का प्रमुख प्राचीन बहुत ही लोक प्रिय और हर्षोल्लास से भरा परिपूर्ण त्योहार है। आज विश्व भर में मनाया जाता है। होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नाम से मनाया जाता था। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है।

इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्ह्य-सूत्र, नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है। विंध्या क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ई. 300 वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है।

कलियुग का आरंभिक दिन - पाचीन काल में यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी। वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता

था। उस समय खेत के अधापके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को होला कहते हैं, इसी से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है। इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है। अतः यह पर्व नववसंत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं।

धार्मिक पौराणिक कथाएँ -

1. प्रह्लाद और होलिका :

कृतयुग में हिरण्यकशिपु नामक अत्यंत बलशाली असुर राक्षस राजा था। अपने बल के अहंकार में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। उनका पुत्र प्रह्लाद महाविष्णु अनन्य भक्त था। प्रह्लाद की विष्णु भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त थी कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। उसकी मदद से, अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने की कोशिश की थी, प्रह्लाद की बुआ, होलिका, प्रह्लाद को जलाकर राख करने के दुष्टयत्न किया तो प्रह्लाद ''हरि ॐ'' का जप करता हुआ महाविष्णु में लीन हो गया। वह सुरक्षित बाहर आ गया। होलिका श्री महाविष्णु के क्रोधाग्नि में, स्वयं होम में जलकर राख होगयी। इस शुभ अवसर पर लोग ख़ुशी से मनाते आते हैं। प्रह्लाद से जुड़ी इस लोककथा के अनुसार, लोग 'होली' त्योहार को कृतयुग से आरंभ कर, त्रेतायुग, द्वापरयुग प्रस्तुत कलियुग अंत तक यह त्योहार मनाते ही आयेंगे। इस शुभ अवसर पर लोग ख़ुशी से होली त्योहार को मनाने लगे हैं।

उस समय से लेकर आज तक हर वर्ष इस होली त्योहार को चंद्र मास (फाल्गुन) की अंतिम पूर्णिमा वसंत ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है, जो आमतौर पर मार्च के अंत में होती है। यह त्योहार दो दिन मनाया जाता है। जिसमें पहले दिन 'होलिका दहन' होता है और दूसरे दिन 'रंगों की होली' खेली जाती है।

प्रथम दिन - होलिका दहन :

होली का पहला काम झंडा या डंडा गाड़ना होता है। इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के आहाते में गाड़ा जाता है। इसके पास ही होलिका की अग्नि इकट्ठी की जाती है। होली से काफ़ी दिन पहले से ही यह सब तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। पर्व का पहला दिन होलिका दहन का दिन कहलाता है। इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ होली जलाई जाती है। इसमें लकडियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। कई स्थलों पर होलिका में भरभोलिए जलाने की भी परंपरा है। भरभोलिए गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई

जाती है। एक माला में सात भरभोलिए होते हैं। होली में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ऊपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है। रात को होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती है। इसका यह आशय है कि होली के साथ भाइयों पर लगी बुरी नज़र भी जल जाए। होलिका दहन के दौरान लोग इसके चारों ओर घूमकर अपने अच्छे स्वास्थ्य और यश की कामना करते हैं। होलिका दहन पर भक्त प्रह्लाद और उनकी बुआ होलिका की कथा की याद दिलाते हैं। इसका यह आशय है कि होली के साथ भाइयों पर लगी बुरी नज़र भी जल जाए। लकड़ियों व उपलों से बनी इस होली का दोपहर से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। घरों में बने पकवानों का यहाँ भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर ज्योतिषियों द्वारा निकाले मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है।

दूसरे दिन - 'रंगों की होली' -

लोग, विभिन्न रंगों, चंदन, गुलाल और पानी से होली खेलते हैं। जब 'होलाष्टक' समाप्त हो जाता है। लोग धुलण्डी खेलते हैं। धुलण्डी का अर्थ है धूलि को वंदन करना या धूल-स्नान करना। पहले लोग मिट्टी, कीचड़ और गारे को एक-दूसरे पर लगाते थे, जो अब रंगीन गुलाल और सूखे रंगों से बदल गया है। एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जाकर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते है।

2. वसंतोत्सव :

यह वसंत ऋतु के आगमन का जश्न है, जो फूलों और रंगों से भरा होता है। होली का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं।

3. धार्मिक महत्व :

पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस दिन भगवान विष्णु ने 'धूलि वंदन' किया था। इस कारण से भी यह एक महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।

4. कामदेव का भस्म होना :

एक अन्य कथा के अनुसार, शिवजी की तपस्या भंग करने के लिए कामदेव ने बाण चलाया था, जिससे शिवजी ने क्रोध में आकर उन्हें भस्म कर दिया। बाद में कामदेव को वापस जीवित किया गया। यह दिन शिव-पार्वती के विवाह के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।

5. राधा-कृष्ण की होली :

होली का त्योहार राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं से भी जुड़ा है।

6. पूतना वध :

कंस को भविष्यवाणी थी कि देवकी का आठवाँ पुत्र उसकी मृत्यु का कारण बनेगा। जब कृष्ण ने पूतना राक्षसी का वध किया, तो लोग उस दिन की खुशी में होली मनाते हैं।

आधुनिक काल में-होली त्योहार :

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फ़िल्मी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं। लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फ़ाग, धमार, चैती और ठुमरी की शान में कमी नहीं आती। अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजाल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है। बाज़ार में इसकी उपयोगिता का अंदाज़ इस साल होली के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान के द्वारा जारी किए गए नए इस होली से लगाया जा सकता है।

होली त्योहार का संदेश -

होलिका दहन के पीछे की पौराणिक कथा में बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाया गया है। यह एक सौहार्द पूर्ण त्योहार है। जिस में लोग वर्षों पुरानी दुश्मनी, लड़ाई, झगड़ा भूलकर एक दूसरे से गले मिलजाते हैं। इसलिए इस त्योहार को दोस्ती का प्रतीक कहा गया हैं।

यह त्योहार जाति, लिंग और सामाजिक भेदभाव की मिटाकर एकता और भाईचारे का प्रतीक है। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रुढ़ियाँ भूलकर ढ़ोलक-झाँझ-मंजीरों की ध्वनि के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया होली का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है इस दिन कांजी के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है। नए कपड़े पहन कर होली की शाम को लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया, नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 16

मंदिर की आवश्यकताओं की आपूर्ति

श्री वेंकटेश्वर भगवान के मंदिर से संबन्धित कार्यवाही सम्प्रदायों का पुनरीक्षण 7वीं शताब्दी से पहले किया गया था। उसके अनुसार सामवाय ने सन् 614 ई. में अपनी ओर से चाँदी की मूर्ति उत्सवों के लिए प्रदान किया। 'मनवालमूर्ति' नाम से व्यवहृत यह मूर्ति 'तिरुविलन्कोइल' के लिए प्रदान की गयी थी (संख्या 8 और 9)। फिर इसके बाद दूसरी मूर्ति, तिरुविलन्कोइल में ''पेरुमान-अड़िगल'', की स्थापना हुई है। इस द्वितीय मूर्ति के लिए शोलनाडु के शोलनूर उलगपेरुमानार ने अनुदान दिया है। यह दान 30 कळंजु (स्वर्ण मुद्रा) का है। इस राशि को मूलधन के रूप में प्रस्तुत किया। यह 51वें वर्ष में पल्लव राजा विजय-दन्तिविक्रमदेव (सन् 830 ई. संख्या 1) ने व्यवस्थित किया है। उसी पल्लव राजा दंतिविक्रम के जमाने में या कुछ समय बाद बाण युवराज विजयादित्य महाबलि बाणराय ने प्रायश्चित्त दान के रूप में दो अन्न प्रसादार्थ देवदान प्रस्तुत किये हैं। ये संयुक्त रूप में तीन देवताओं के लिए हैं - तिरुविलन्कोइल पेरुमानडिगल, तिरुमन्तिरसाल - पेरुमानडिगल और तिरुवेंकटत्तु - पेरुमानडिगल (मूलबेरम)। अंतिम भगवान वेंकटाद्रि पर विराजमान तिरुवेंकटेश्वर (श्री वेंकटेश्वर) ही हैं। दो अन्न प्रसाद व्यवस्थाएँ तीन देवताओं को दृष्टि में रखकर की गयी होने के कारण समवेत रूप से यह समझा जा सकता है कि ये तीनों मूर्तियाँ एक ही स्थान पर अगल-बगल में स्थित हैं। युवराज बाण की व्यवस्था इन्हीं के लिए की गयी हो सकती हैं। इस पुराने समय में आराधना के लिए जो छोटी मूर्ति थी वही हो सकती है (विमानम् की मूर्ति)। पूर्व समयों में (पहले की शताब्दियों में) गर्भगृह साधारणतया छोटे ही होते थे। उनके संवर्तियों के रूप में अर्द्ध मंटपम् भी होते थे। ये भी बहुत छोटे गर्भगृह के समान ही (विशालता में) होते थे। उनकी प्रदक्षिणा लेनी होती थी और वह भी खुले में। ऐसी स्थितियों में 'तिरुविलनकोइल' छोटे गर्भ मंदिर में कहाँ थे, इसका अनुमान लगाना कठिन ही होगा। हो सकता है गर्भगृह में ही एक छोटे स्थान पर प्रतिष्ठित किये गये हों। जब तक नया मंदिर बाहर निर्मित नहीं हुआ हो तब तक यही स्थिति हो सकती थी। ऐसा कोई स्थान हो इसका भी कोई संकेत नहीं मिलता अथवा ऐसा नया मंदिर निर्मित होगा, इसकी भी सूचना नहीं है। इस कारण से यही माना जा सकता है कि तीनों मूर्तियाँ

श्री वेंकटेश्वर की ही प्रतिमूर्तियाँ हो यथा चाँदी की मूर्ति मनवालपेरुमाल (संख्या 8 और 9), तिरुविलंकोइल - पेरुमानडिगल, तिरुमंतिरशालै - पेरुमानडिगल ये तीनों मूर्तियाँ मूलविराट श्री वेंकटेश्वर के पास ही गर्भगृह में एक मंच पर रखी गयीं हो। तीनों प्रतिमूर्तियाँ श्री वेंकटेश्वर के मूलविराट के समान ही अर्चित हुई हैं। ये तीनों मूर्तियाँ ध्रुवबेरम् (मूलमूर्ति) के प्रति रूप में विलसित मानी जा सकती हैं, अन्य मूर्तियाँ नहीं। क्योंकि ये राम, कृष्ण, शिव, गणेश, स्कंध या अन्य से संबन्धित नहीं हैं।

''तिरुविलनकोइल'' पद संख्या 8, जो 7वीं सदी की सन् 614 ई. के परिलेख में तथा 9वीं शती के संख्या 1 और 4 में (सन् 830 ई.) मिलती हैं। बाद में 13वीं शती तक भी इसके उल्लेख मिलते रहे हैं। इनको हम शासन काल के तीसरे वर्ष नायनार जटावर्मन सुंदर पाण्ड्य I के समय के परिलेख में भी पाते हैं (संन् 1254 ई.)। इस परिलेख में भूमि माप की छडी का उल्लेख है और इस का उपयोग ''तिरुविलन्कोइल'' में होता रहा है। इतना ही नहीं संख्या 137 (खंडित परिलेख) में, जो सन् 13वीं सदी का भी है, ''तिरुविलन्कोइल - पेरुमानडिगल'' का उल्लेख है। इसकी दोनों पंक्तियों में भी यह उल्लेख मिलता है - (1) नंबि अमुदन तिरुविलनकोइल-पेरुमानडिगलुक्कु तिरुवुन्नाळिगै... (2) ''कोइल पेरुमानडिगलुक्कु तिरुवुण्णालिगैपुरम तिरुवमिर्दु... इसका तात्पर्य यह है कि नंबि अमुदन ने पवित्र अन्न-प्रसाद का समर्पण किया था। यह तिरुविलनकोइल की मूलविराट मूर्ति के लिए था। ये गर्भ मंदिर में ही विराजमान रहते हैं। एक प्रकार से यह ''तिरुविलनकोइल'' शब्द को अर्थ और महत्व प्रदान करता है और ''तिरुवुण्णलिगैपुरम्'' की पवित्रता से तुलनीय भी बनाता है।

7वीं सदी के संख्या 8 अभिलेख में उल्लेखित अभिव्यक्ति चाहे छोटे गर्भगृह की सूचना दें, इसमें 'मनवालपेरुमाल' की नयी चाँदी की मूर्ति है। यह श्री वेंकटेश्वर भगवान के छोटे गर्भगृह की ओर ही संकेत देता है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि वेंकटेश्वर मूर्ति की स्थापना या पूर्व मंदिर का पुनर्निर्माण भी हुआ हो। इस अभिलेख का समय 6वीं सदी के पूर्व का ही होगा।

14वीं सदी में चौथी ताँबे की मूर्ति का आरंभिक रूपायन हुआ है। इस प्रतिमूर्ति को शंख और चक्र युक्त हाथों से रूपायित किया गया। इसके साथ-साथ भगवान वेंकटेश्वर की दोनों देवेरियों - श्रीदेवी और भूदेवी को भी उनके साथ जोडा गया। इससे एक पारिवारिक गठन रूपाइत हुआ। इस त्रयी के साथ आगमशास्त्र के अनुरूप ''पंचबेरम्'' की आवश्यकता की पूर्ति हुई। इससे पूर्व रूपाइत तीन (ऊपर उल्लेखित) मूर्तियों के लिए विशेष प्रकार्य निर्देशित हुए हैं। वेंकटेश्वर और श्रीनिवास नाम प्रचार में आये। इस रूप में तात्कालिक व्यवस्था की कल्पना हो गयी थी।

'ध्रुवबेरम्' मूलविराट की मूर्ति अर्थात् श्री वेंकटेश्वर भगवान की असली मूर्ति, अपने दिव्य अलंकरणों के साथ विभिन्न प्रकार की सेवाओं के समय अपना दिव्य दर्शन देता है। इसी विराट मूर्ति की सेवाएँ नित्य प्रति आगम शास्त्रोक्त रीति से संपन्न होती हैं। गुरुवार के दिन फूलों से सज्जित और शुक्रवार के दिन अभिषेकम् विशिष्ट सेवाएँ हैं। भगवान को नित्यप्रति विविध प्रकार का पण्यारम् (अन्न प्रसाद भोग) चढाया जाता है। प्रसन्न मुद्रा में भगवान सभी सेवाओं को ग्रहण करते हैं।

भगवान की चाँदी की मूर्ति, मनवालपेरुमाल, जिसे पल्लव रानी सामवाय ने समर्पित किया था, वह उत्सवमूर्ति थी। इस मूर्ति को उत्सव के दिनों में मंदिर से बाहर, अन्य प्रांतों में विशिष्ट प्रकार के अन्न-प्रसाद भोग अर्पित होते हैं। इस मूर्ति को

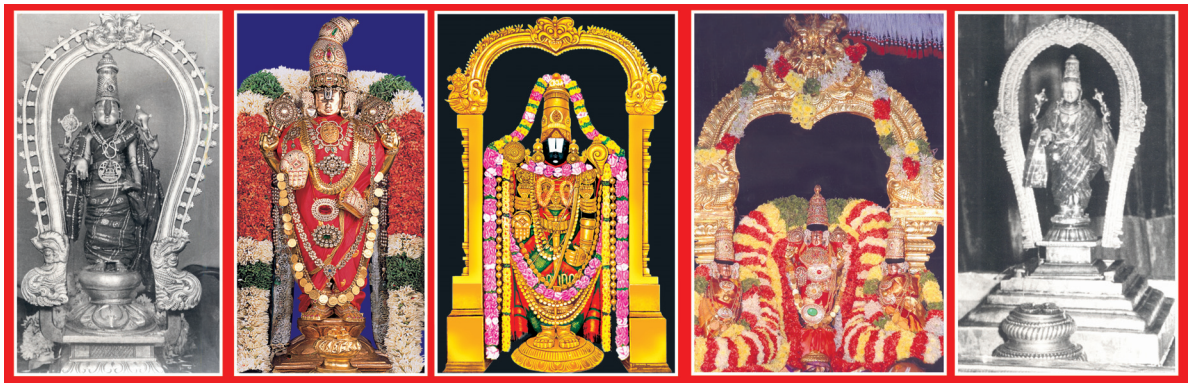

''कौतुकबेरम्'' या ''भोगमूर्ति'' कहते हैं। इस मूर्ति को भी नित्य आराधना और रात में पलंग सेवा (निद्रा सेवा - एकांत सेवा) भी होती है। यह रात के समय भगवान को सुलाने की सेवा है।

तिरुविलनकोइल - पेरुमानडिगल (संख्या 1 और 4) ''बलिबेरम्'' के रूप में स्वीकृत किये गये होंगे। ''बलिबेरम्'' के रूप में परिवार-देवताओं के साथ सम्मिलित रूप से महामणिमंटपम् में पूजाएँ, पंचांग श्रवण और पूर्व दिन का लेखा-जोखा (आय से संबन्धित) विवरण पाते हैं। तिरुमंतिरशालै - पेरुमानडिगल (संख्या 4) शायद ''स्नपनबेरम्'' हो गये हैं। इस रूप में वे वेद मंत्रों और पूजा मंत्रों तथा प्रार्थनाओं, धार्मिक अनुष्ठानों और तत्संबन्धी विधियों आदि को स्वीकार करते हैं। इस रूप में ''स्नपनबेरम्'' का संबन्ध ध्रुवबेरम् के साथ स्थापित होता है।

'मलैकिनियनिन्र पेरुमाल' या मलयप्पस्वामी (श्री वेंकटेश्वर) अपनी दोनों नाच्चियार (देवेरियों) के साथ ''उत्सवबेरम्'' के रूप में उभरते हैं। इस प्रकार की उत्सवमूर्तियों की सूचना सन् 14वीं सदी में मिलती हैं।

जब किसी भी मंदिर में मूर्ति की प्रतिष्ठा होती है तो तुरन्त उसमें ज्योति की आवश्यकता सबसे पहले हो जाती है। ज्योति प्रकाश में ही भक्त भगवान का दर्शन ले सकते हैं। इतना ही नहीं, भगवान के लिए अन्नप्रसाद समर्पण, फूल मालाओं का अर्पण और दैनिक पूजाएँ भी ज्योति प्रकाश में ही समर्पित होती हैं। सर्वप्रथम अभिलेख उलगपेरुमानर का है। उसी में उनका समर्पण उल्लेख है। उस समर्पण में तिरुविलनकोइल-पेरुमानडिगल के लिए उन्होंने ज्योति प्रज्ज्वलनार्थ 30 कळंजु सुवर्ण का देवदान दिया है। दूसरे अभिलेख में शियकन या शियगंगन द्वारा ज्योति के लिए देवदान का उल्लेख मिलता है। पल्लव राजा विजयदंति विक्रमवर्मा के राज्यकाल में शियगंगन ने ज्योति प्रज्ज्वलन हेतु देवदान दिया है। पल्लव युवरानी सामवाय ने तो शाश्वत रूप से दीप कलश दान दिया है जो मनवालपेरुमाल की चांदी की मूर्ति के सामने ज्वलित रहे। कोडुंगोलुरान द्वारा भी (संख्या 12 में एक और संख्या 13 में एक) ज्योति दान की सूचना है। यह भगवान वेंकटेश्वर के लिए ही अनुदानित है। 14वीं शती तक व्याप्त समय में (कालावधि में) लगभग 40 दीपदान अनुदानों का उल्लेख मिलता है। संख्या 19 से यह सूचना भी मिलती है कि श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए तिरुमुंडियम् गाँव के सभैयार द्वारा 24 ज्योति अनुदानों की सूचना मिलती है। इनमें एक कर्पूर ज्योति भी है। लेकिन 22 दीप प्रज्ज्वलन बन्द हो गये थे। इस पर अधिकारी या गवर्नर ने विचार-विमर्श के लिए एक समिति का गठन किया। तत्पश्चात् तिरुमुंडियम् सभा के पास रखी गयी कुछ धन राशि से 24 ज्योतियों के प्रज्ज्वलन का आदेश भी दिया गया था। संख्या 123 से प्रस्तुत मंदिर में 6 दीप-ज्योतियों के प्रस्तुतीकरण की सूचना मिलती है और संख्या 132 से चार की। ये शाश्वत रूप से भगवान के मंदिर को प्रकाशित करती रही हैं। इस प्रकार उक्त समय तक ही मंदिर को प्रकाशित करने के लिए आवश्यक ज्योति दीपदान की व्यवस्था संतोषदायक रूप में हो गयी थी।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

उगादि पर्व का वैशिष्ट्य

- डॉ.एस.हरि

'उगादि' दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और महाराष्ट्र में नववर्ष के तौर पर मनाया जाता है। इस त्यौहार का संबंध सृष्टि के आरंभ से जोडा जाता है। यह पर्व चैत्र मास के प्रथम दिन मनाया जाता है। इसीलिए इसे उगादि या युगादि भी कहते हैं। यह त्यौहार नववर्ष की शुरुआत के रूप में जाना जाता है।

शास्त्रों में उगादि त्यौहार को बडा महत्व दिया गया है। कहा जाता है कि ब्रह्म ने सृष्टि का आरंभ इसी दिन किया था और सूर्य की पहले किरण भूमि पर इसी दिन उत्पन्न हुई थी। उगादि के दिन ही त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम चंद्र का राज्याभिषेक हुआ था। इसी दिन द्वापरयुग में शांतगुण संपन्न युधिष्ठिर सिंहासन पर आसीन हुए थे। कलियुग में सम्राट शालिवाहन का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। इस तरह यह त्यौहार उज्वल भविष्य की शुभकामना के शुभ अवसर पर मनाया जाने लगा। इसी गौरवशाली परंपरा को बरकरार रखते हुए आज भी यह त्यौहार मनाया जाता है।

उगादि चैत्र मास के पहले दिन मनायी जाती है। वास्तव में चैत्र मास मार्च-अप्रैल के बीच पडता है। उस समय वसंत ऋतु अपनी चरम सीमा पर रहती है। प्रकृति पुष्पित-पल्लवित हो उठती है। प्रकृति की सुंदरता शोभायमान होती है। जिस तरह उस समय में प्रकृति में परिवर्तन होता है, उसी तरह हमारे शरीर और मन-मस्तिष्क में भी परिवर्तन होता है। प्रकृति सारे तत्व जैसे पेड-पहाड, पशु-पक्षी आदि समस्त प्राणी उस दौरान प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए, उससे होनेवाले दुष्परिणामों से बचने का प्रयास करते हैं। इसलिए मानव को भी प्रकृति का अनुसरण करना चाहिए। ताकि वे भी सुरक्षित जीवन यापन कर सकें। परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। वेदों में प्रकृति को ईश्वर का साक्षात रूप मानकर उसके हर रूप की वंदना की गई है। इसके अलावा आकाश के तारों और आकाश मंडल की स्तुति कर उनसे रोग और शोक को मिटाने की प्रार्थना की गई है। अतः प्रकृति की प्रार्थना से मनुष्य हर तरह की सुख-समृद्धि पा सकता है। इसी दृष्टि से प्राचीन ऋषि-मुनि त्यौहार के ये सारे नियम बता गए हैं। उगादि का यह पर्व हमें प्रकृति के और भी समीप ले जाने का

कार्य करता है। क्योंकि उगादि के अवसर पर बनाये जाने वाले पच्चडी नामक व्यंजन स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह हमारे शरीर के प्रतिरोधी क्षमता को भी बढ़ाता है।

उगादि पच्चडी का महत्व

उगादि पच्चडी का अपना खास महत्व है। इस त्यौहार दौरान एक विशेष चट्नी बनायी जाती है, जो उगादि पच्चडी नाम से प्रसिद्ध है। 'पच्चडी' तेलुगु भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'चट्नी'। इसकी षड्रुचियाँ होती हैं।

(1) इमली : इमली से खट्टापन।

(2) गुड : गुड से मिठास।

(3) कच्चे आम : कच्चे आम से कसैलापन।

(4) नमक : नमक से नमकीन।

(5) नीम के फूल : नीम के फूलों से कडुआहट और

(6) हरीमिर्च : हरीमिर्च से तीखापन इसमें मिलते हैं। इन्हीं से छह स्वादों को चट्नी बनायी जाती है और घर-घर बाँटी जाती हैं। ये छह स्वाद जीवन के तरह-तरह के अनुभवों के प्रतीक हैं। इससे यह संदेश मिलता है कि जीवन सुख-दुःखों का संगम है।

वास्तव में उगादि पच्चडी में आरोग्य सूत्र निहित है। ''ऋतु संधिषु व्याधिर्णायते'' सभी ऋतु संधियाँ बीमारियाँ फैलाती हैं। खासकर वसंत और शरत ऋतुएँ विपरीत रोग फैलती हैं। इसलिए शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए कई आहार-विहार नियम बनाये गए हैं। वसंत ऋतु के समय में प्रकृति में बहुत परिवर्तन आते हैं। उन परिवर्तनों से बर्दाश्त करने की शक्ति शरीर को देने वाले पदार्थों से उगादि पच्चडी बनती है।

'काल' की गणना मुख्य रूप से दो तरीकों से की जाती है - एक चंद्रमान, दूसरा सौरमान। भारतीयों ने दोनों को समान महत्व दिया है। अधिक मासों में दोनों को समन्वय किया है। सौरमान के अनुसार संक्रांति आदि त्यौहार मनाये जाते हैं। नित्य व्यवहार के लिए चंद्रमान का उपयोग करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि रात के समय आकाश में चंद्रकलाओं को देखकर तिथियों को पहचान सकते हैं। नक्षत्रों को देखकर

महीनों का पता लगा सकते हैं। सबके लिए यह आसान तरीका है। सूर्य को देखकर इनकी गणना करना असंभव है। क्योंकि सूर्यकांति में नक्षत्र नहीं दिखायी देते। नक्षत्रगमन से काल गणना दोष रहित भी होता है। शकमान बदल सकता। किंतु नक्षत्रगमन स्थिर रहता है। करोडों वर्षों के पहले की घटनाओं के समय की सही गणना आज भी की जा सकती है। 'उ' माने 'नक्षत्र', 'ग' माने 'गमन', 'उगा' माने 'नक्षत्रगमन' इस प्रकार कुछ लोगों का मानना है कि 'उगादि' माने नक्षत्रगमन की गणना पहला दिन। इससे यह स्पष्ट होता है कि पहला वर्ष, पहली ऋतु, पहला माह, पहली तिथि की शुक्ल प्रतिपदा के पहले दिन को नववर्ष के आरंभ के अवसर पर उगादि बड़ी श्रद्धा से मनायी जाती है। भास्कराचार्य ने अपने ''सिद्धांत शिरोमणि'' नामक ग्रंथ में यह प्रतिपादित किया है कि दिन, माह, वर्ष तीनों का प्रारंभ एक ही बार उगादि के दिन संभव हो पाया है। काल साक्षात् आदित्य भगवान का स्वरूप माना जाता है। अतः कालस्वरूप जानने वाले दीर्घायुष्मान एवं काल के विजेता बनते हैं।

पंचांग श्रवण का महत्व

पंचांग श्रवण उगादि त्यौहार का प्रमुख घटक तत्व है। यह शुभ परिणामों का सूचक माना जाता है। गंगा स्नान करने से जो फल मिलता है, वही फल पंचांग श्रवण से मिलता है। गोदान का फल प्राप्त होता है। संतान की प्राप्ति होती है। आयु बढती है। शत्रुओं का नाश होता है। कठिन से कठिन कार्य भी सरल बन जाते हैं। अतः पंचांग श्रवण करना आज की युवा पीढ़ी के लिए बहुत ही आवश्यक है।

शास्त्रों में सूर्य, चंद्र, पृथ्वी और नक्षत्र आदि सभी की स्थिति, गति और दूरी के मान से पृथ्वी पर होनेवाले दिन-रात और संधिकाल को विभाजित कर संपूर्ण पंचांग

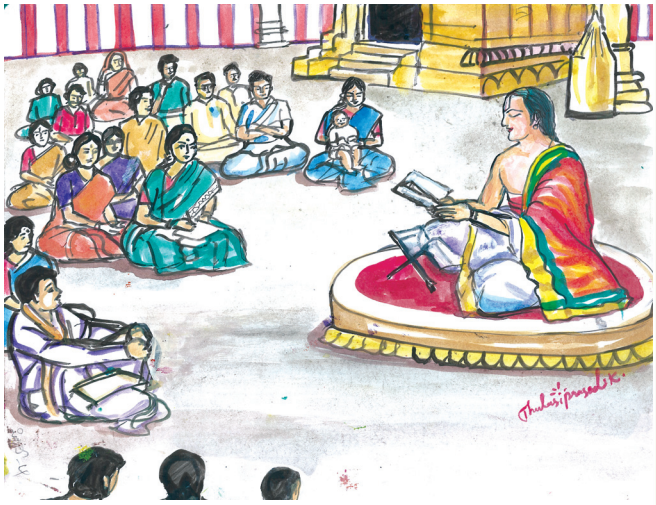

बनाया गया है। पंचांग तक प्रणाली है जिसमें काल, दिन, नक्षत्र आदि का नामांकित किया जाता है। खगोल शास्त्र की दृष्टि से भी पंचांग महात्वपूर्ण माना गया है। पंचांग पठन और श्रवण से भी लाभ मिलता है।

पंचांग के पाँच प्रमुख अंग होते हैं -

(1) तिथि, (2) वार, (3) नक्षत्र, (4) योग और (5) करण।

तिथेश्चश्रित माप्नोति, वारादायुष्य, वर्धनं,

नक्षत्रात हरते पापं, योगाद्रोग निवारणं,

करणात्कार्य सिद्धिस्य पंचांग फल उत्तमं।

(1) तिथि : तिथि के पाठन और श्रवण से माता लक्ष्मी की कृपा मिलती है। हर तिथि का अपना-अपना महत्व होता है। तिथि 16 होती है।

(2) वार : वार के पाठन और श्रवण से आयु की वृद्धि होती है। वार सात होते हैं।

(3) नक्षत्र : नक्षत्र के पाठन और श्रवण से पापों का नाश होता है। नक्षत्र 27 होते हैं।

(4) योग : योग के पाठन और श्रवण से रोग दूर होते हैं। मनुष्य स्वस्थ्य बना रहता है। इसीलिए आज स्कूलों

और कलाशालाओं में योग शिक्षा दी जा रही है। ताकि छात्र-छात्राओं का स्वास्थ्य बना रहें और शिक्षा पर ध्यान दे सकें। योग भी 27 होते हैं।

(5) करण : करण के पाठन और श्रवण से समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। करण 11 होते हैं।

प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग पंचांग पाठन करते थे। पंचांग श्रवण का पहला तत्व है - फलश्रुति, अर्थात् सुनने से मिलने वाला फल। दूसरा है वार्षिक फल का पाठन। तीसरा है नवनायकों के बारे में बताना। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष में, प्रत्येक ग्रह की स्थिति जानने से पूरे वर्ष का फल जान सकते हैं।

वस्तुतः पंचांग पाठन और श्रवण अत्यंत शुभ माना जाता है। मान्यता है कि भगवान श्रीरामचंद्र भी विधिवत पंचांग का श्रवण करते थे। प्राचीन काल से पंचांग श्रवण का महत्व बताया जा रहा है। क्यों कि इसी के आधार पर भविष्य में होने वाले शुभ-अशुभ का पता चलता था। इससे लोग सतर्क रहकर सुखमय जीवन यापन करने की ओर अग्रसर होते थे।

एक त्यौहार मनाने में बहुत सारी विशेषताएँ निहित रहती हैं। भारत देश में मुनि-महर्षियों ने अपने तपोबल एवं दिव्यदृष्टि से जो ज्ञान प्राप्त किया है, उसके आधार पर मानव जाति के हित के लिए कई आचार-व्यवहार के नियम बनाये हैं। इन पारंपरिक नियमों में खगोल विज्ञान, स्वास्थ्य, पारिवारिक एवं सामाजिक विकास, चारित्रिक विकास, नैतिक मूल्यों निर्वहण तथा आध्यात्मिक जीवन के प्रति आस्था आदि कई महत्वपूर्ण प्रयोजन समेटे हुए हैं। इनका आचरण अनजाने करने पर भी लाभ मिलता है। जानकर करने पर आनंद की प्राप्ति होती है। सारे त्यौहार सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना जागृत कर लोगों में समरसता के मार्ग प्रस्तुत करते हैं। अंग्रेजी 'न्यू इयर' हमारा नव-वर्ष नहीं है। चैत्र प्रतिपदा ही हमारा नववर्ष है। इसका सीधा संबंध भारतीय संस्कृति से है।

उगादि के अवसर पर लोग पुराने वर्ष को बिदाई देते हैं और नये वर्ष का स्वागत करते हैं। नववर्ष की शुभकामनाएँ दी जाती है कि सबका जीवन मंगलमय हो। वास्तव में अपने में सबको और सब में अपने को देखकर व्यक्ति जब कोई त्यौहार मनाता है, तभी उसे पूर्ण सुख और संपूर्ण आनंद, आनंद की प्राप्ति होती है। क्योंकि तब वह सबके हित में ही अपना हित देखने लगता है तथा स्वार्थ और संकीर्णताओं को भूलकर परहित, परोपकार की ओर अग्रसर होता है। इस यथार्थ सत्य को जानते हुए आज के युवावर्ग को आगे बढ़ना चाहिए। उनका कर्तव्य बनता है कि इस उगादि पर्व को सादगी व पवित्रता से मनाएँ। अतएव उगादि त्यौहार को निष्ठापूर्ण मनाते हुए भारतीय गरिमामय संस्कृति का परिरक्षण करें।

अप्रैल 2026

01. तुंबुरुतीर्थ मुक्कोटी
14. तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
20. परशुराम जयंती, अक्षयतृतीया
21. श्री शंकर जयंती
22. श्री रामानुज जयंती
23. श्रीराम जयंती
25 से 27 तक तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव
28 से मई 01 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
30. श्री नरसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

वेंकटाद्री पर प्रीति भोज

विनोद से इस रूप में कहते हरि को सुन कर उस स्वामी को नमस्कार करके अष्टवसु ने अक्षय पात्रों को मंगाया। तब अग्निदेव ने शीघ्र ही स्वयंपाक बनाया। 'भोजन का प्रयत्न करो' यह सुन कर हरि ने कार्तिकेय को बुलाकर ब्राह्मण भोजन के लिए पांडव तीर्थ से लेकर श्रीशैल पर्वत तक साफ करवाया। फिर भोजन के लिए स्नान करने के लिए कहा गया तो सभी स्नान करके लौटे। तब सारे मुनि प्रमुख स्नान संध्यादि कृत्य पूरा करके पंक्तियों में फैल कर बैठ गए। हरि ने ब्रह्म को बुलाकर ''अनर्पित अन्न ब्राह्मणों के लिए देना उचित नहीं है। इसलिए अहोबिल नारसिंह को अर्पण करने के लिए कहा'' तब ब्रह्म ने उस भोज्य पदार्थों को शुचि करके नृसिंह और कुल देवताओं को नैवेद्य के रूप में अर्पण किया। धूप, दीप, नैवेद्य आदि को समर्पित करके वैश्व देवादि बलिहरणादि कर्म भी किए। तब श्रीनिवास की आज्ञा पर वायुदेव ने केले के पत्ते लाकर थाली के रूप में बनाया। उस केले पत्ते पर सकल पदार्थों को परोसा गया। ब्रह्म ने गंध, पुष्पाक्षतों के साथ द्विजार्चन किया। देवताओं में कुछ ने धूपात्रिकाओं को हाथ में लेकर पंक्तियों की परिक्रमा करके आने पर उस समय 'एक विष्णुर्महद्भुत' नामक मंत्र को जप कर शुभाक्षा जल को छोड कर 'सर्वम श्रीकृष्णार्पणम' कहते सब को भोजन परोसा गया। गोविंद, हरि भजन करते, वराहा, भूदेवी समेत सभी ने भोजन किया। सब को वरुण देव ने जल पिलाया। मन्मथ और आंजनेय पंक्तियों के साथ घूमते 'समय निकल रहा है। सावधान होकर भोजन कीजिए।' उपचार करते सभी भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, पानीय आदि का सेवन करके तृप्त हुए। ब्रह्म से पान आदि को स्वीकार करके उठकर वदन, पाणी, पाद प्रक्षालन, आचमन करके सम सुस्थल पर सभी बैठ गए। उन के द्वारा वेद घोष करने से श्रीनिवास ने उन्हें सभा तांबूल दिलाया। दिजों को दो दो निष्कम, ऋषियों को एक एक निष्कम के रूप में दक्षिणा दिलायी। सभा को नमस्कार करके आशीर्वाद मंत्राक्षतों को ग्रहण करके पुत्र, कलत्र, मित्रादि के आशीषों को स्वीकार किया। तब हरि, हर, ब्रह्मादि अपने निजी पत्नियों समेत

भोजन करने के बाद बाकी अग्नि, वायु आदि प्रमुखों ने भोजन किया। बाद में अग्नि देव के द्वारा सारे बरतन माँझे गए।

सायंकाल का वर्णन

हरि के विवाह के लिए आए ब्रह्म आदि सारे प्रमुखों ने भोजन किया। अब मुझे यहाँ पर क्या काम है? अब पृथ्वी पर मेरे लिए मेरु पर्वत ही आश्रय है। वहाँ मैं चला जाता हूँ। 'हे चंद्र! अब तुम वेंकटाचल पर सकल सुर मुनि मुख्यों को संतोष हो, ऐसा अपनी चांदनी को बिखेर दो।' ऐसा बताकर दिवाकर मेरु पर्वत पर पहुँचने के लिए निकल पडे। इस रूप में सूर्य के पश्चिम की ओर अस्त होने के बाद शेषाद्री पर रहनेवाली लक्ष्मी आदि सति हर्षातिरेक में सोने के वस्त्र पहन कर, पद्मराग भूषणादि से अलंकृत होकर, रक्त चंदन, हल्दी, कुंकुम आदि के साथ भक्ति से चमकी। तब मानो पश्चिम की कांता यात्रा करके आयी हो, ऐसा संध्या राग शुरू हो गया। इससे पार्वती आदि प्रमुख सुहागिनों के मुखडे, मणि भूषणादि लाल रंग में बदल गए। पक्षिगण उन्हें फल समझ कर खाने के लिए वृक्षों पर उतर गए। विपुल नीलांबर भर विमल मोतियों की तरह तारे शेषाद्री के आकाश में चंद्र के साथ मिल कर प्रकाशित हुए।

चंद्रोदय का वर्णन

सागर को उफान कर, जलरुह पंक्तियों का निरीक्षण करके उन के मुँह बंद करके, कुमुद संतति को बढाकर, नहीं हटानेवाली शुभ्र कांतियों को बढाकर, विरहियों को सहलाते, उन्हें विरक्त करके, चक्रवाकों को हर्ष से तृप्त करके, अंधेरे को भगाकर, कोंपलों से बने दीप को जलाकर, अच्छी शीतल साडियों को पर्वतों की सानु में मानो फैला दी गयी हो, जैसी चांदनी को बिखेर दिया चंद्र ने। मानो पूर्व दिक्सति को देखने की रीति में चंद्र का उदय हो गया। वनगिरि सानु श्रृंगों पर महा मुनिगण, शिव, दिक्पतियों की कामिनियों के साथ रहते समय चंद्र ने उन में मोह बढाया। तब हरि महानियम के साथ सिरि को वक्ष पर न रखते हुए क्यों कोंपलों की शय्या पर लेटे हैं? वकुला के पास लक्ष्मी, वल्मीक के बिल के पास हरि, दोनों एक दूसरे से अलग चंद्र ने देखा। दुःखी होकर अपने को कलंकित समझा। 'मेरे साथ पैदा होनेवाली श्री तरुणी मणि को अलग करनेवाले हरि को मैं क्यों हित पहुँचाऊँगा।' इस रूप में चंद्र ने सोचा। ''प्रेम से हरि के वक्षस्थल पर भोगलीला करनेवाली लक्ष्मी राग विरहित बन कर चट्टान की कठोर शिला पर अब लेटी हुई है। इसे मैं कैसे देख सकता हूँ? क्रोधी भृगु के द्वारा किए गए कार्य से कोल्हापुर में रहनेवाली लक्ष्मी को पहले ही यहाँ बुलाने की जगह, धोखा देकर माया करके, अपने अभ्यंगन स्नान के समय बुलाया। कम से कम अब तो प्रेम से अपने वक्षस्थल पर रखेंगे समझकर विश्वास करके आया। इस रूप में रमा के साथ हरि के द्वारा किये गए इस धोखे को देखा। मेरे नेत्र ठंडे पड गए। अपने गुस्से को मैं कैसे उतारूँ।'' इस रूप में गुस्सा बढने से चंद्र हरि के नेत्रों में शीत किरणों को फैला कर दो प्रहरों तक इसी रूप में सुध बुध खोकर सोते रहो हे साला! कहते हरि को हिमकिरण चंद्र ने शाप दिया। तब हरि अपनी देह को भूल कर सो गए। फूलों की शय्या पर अपने विश्व तेजस को भी भूल कर, अखंड तुर्य आनंद से हरि नींद में मानवातीत सुख को प्राप्त करते रहे थे। इधर लक्ष्मी को नींद नहीं आयी। उसे इस रूप में देखकर चंद्र को महा चिंता हुई। अपनी बहन को दुःखी देखकर चंद्र शुष्क पड गया। शुक्ल सप्तमी के दिन के चंद्र की तरह होकर सोम ने सोचा। ''रमा सति को यहाँ पर प्रेम के साथ सहलाकर अपने वक्ष पर रखने की जगह दयाहीन बन कर आकाश राज की पुत्री के साथ विवाह करने के लिए हरि ने क्यों सोचा है? ये ब्रह्मादि देवताओं ने विष्णु से क्यों नहीं

कहा कि इंदिरा के साथ ही रहो। यह विवाह क्यों कर रहे हो? ऐसा कहने की जगह ये सब स्वयं विवाह के बिछौले बन कर विवाह करने आये हैं। इसलिए इन के वन में अंधेरे को ढकेल कर जाऊँगा!'' इस रूप में सोचते चंद्र पश्चिम की तरफ जाने लगा।

अपने विभ को इस रूप में रूठ कर जाना देखकर सारे ताराएँ दीन बन गए। क्रम से चंद्र का ही अनुसरण उन्होंने किया। कुमुद भी अपने आप्त को दुःखी देख कर मुकलित होकर आर्ति बने। कुमुद भी असमय इस रूप में अपने नेत्रों को बंद करने लगे। तब चंद्र का अस्त हो गया। अब सूर्य एक प्रहर के बाद ही शीघ्र ही आएगा। उस के आने के पहले ही ब्रह्मादि को एक बार देखना चाहिए। इस रूप में सोचते चंद्र ने काली साडी पहन कर मानो आये हो ऐसा पहाड पर अंधेरा छा गया। उस अंधेरे को देखकर शेष अपने फणों को उठाकर ''हरि, हर, ब्रह्मादि के यहाँ होते इस रूप में अंधेरे का यहाँ पर होना उचित नहीं है। सोच कर अपने फण रूपी मणियों से महा प्रकाश करवा कर मानो दिन हो गया हो, ऐसा ज्योतिर्लताएँ दिखा दीं। हेमाद्री के इस पार रहनेवाले इस घने अंधेरे को पकड कर हटाऊँगा।'' इस रूप में गुस्से से नये रूप में शेष वहाँ पर आये। सूर्य के पूरब की तरफ आते देखकर तब अंधेरा अधिक घना बनने का डर उसे हुआ। जलरुह संभवों को संतोष प्रदान करने के लिए शेष ने वेंकटाचल को दीप्त किया। तब चंद्र अब सप्त तुरगाधीश सूर्य आयेगा। अगर मैं यही रहूँगा तो मुझे वह मारेगा। इस रूप में मन में सोचते हुए चंद्र हेमाद्री से हट कर चला गया।

सूर्योदय का वर्णन

हरि को जगाकर मानो विवाह करने भेजने केलिए शुभ्र वस्त्र पहन कर धरती पर प्राक्दिशा नेत्री भक्ति से आ गया हो, ऐसा तब पूरब में सूर्योदय हो गया। हल्दी और चूने को सोने की थाली में मिलाकर वेंकटेश्वर की आरती उतारने छाया नामक एक स्त्री आयी है, ऐसा मानो पूरब में अरुणोदय हो गया हो। बडी इच्छा से हरि के विवाह में जाना है ऐसा सोचते शीघ्र ही उदयाचल पर चढ कर दिवाकर वेंकटेश्वर के पास आ गया। चंद्र किरणों के कारण मुकलित पद्म सूर्य किरणों के स्पर्श से विकसित हुए, ऐसा विष्णु जाग गए। नेत्र खोल कर विनोदी बनते हुए कमलमुखी को देखकर, संतोष के साथ उठकर 'वहाँ ब्रह्मादि के द्वारा यात्रा के लिए तैयार होने की बातें' सुन कर हरि ने ऐसा ही किया। अपने महा मित्र के आते शत्रु चंद्र के रूठ कर जाने के बारे में जान कर हँस गये हो, मानो ऐसा नलिन समिति तब संतोष के साथ विकसित होने लगी। रात के समय सरसिजों के अंदर बंद भ्रमर शीघ्र कमलों को छोड कर झुंकार ध्वनि करते निकल कर भागने लगे। पक्षिगण कल कल ध्वनि करते मानो हरि के विवाह में आने का निमंत्रण देते दिक्देवताओं को बुला रहे हो। ऐसा पक्षिगण कलरव करने लगे थे।

वृक्ष, लतादि अपने निजी पीत वर्ण को बढाते सारे जगत में अपनी किरणों को ओढाते आनेवाले दिवाकर को देखकर जाग उठे। तब वेदांतीवेत्ता आचार्य, तापसियों, हरि, शिव आदि ने प्रसिद्ध पुष्करिणी के तट पर यथाक्रम से स्नान, अर्घ्य, नित्य कर्मादि को सावधानी से पूरा किया है। सारे लोग नारायण के साथ तथा अपनी पत्नियाँ और सुतों के साथ सानंद से यात्रा पर निकल पडे। नागेंद्र, गिरीश आदि के कल्याण गीत गाते सारे लोग निकल पडे।

वेंकटेश्वर ब्रह्मादि के साथ विवाह के लिए निकलना

सुहागिने आगे चलते, द्विजों के द्वारा चारों वेदों का पठन करते, इंद्राणी आदि देवता स्त्रियाँ मोतियाँ, फूल, शुभाक्षत आदि को मुख्य रूप से लेते चित्त में आनंद के

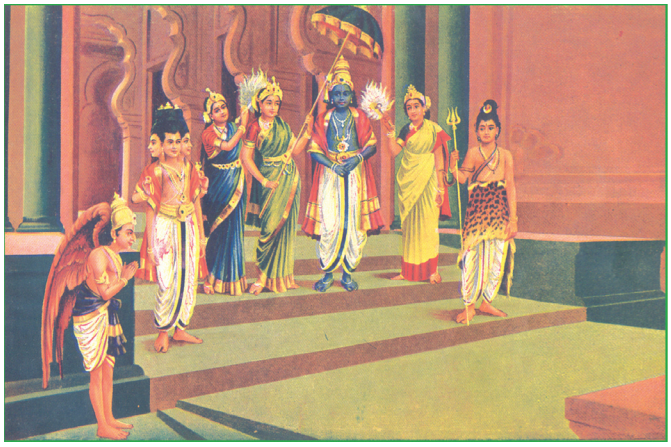

साथ श्रीस्वामी को आशीर्वाद देते हुए निकल पडे। इंदिरा सुवर्ण रथ पर, पुष्पों के रथ पर वकुला, अश्व पर चक्री, नंदि पर शिव, हंस वाहन पर ब्रह्म आरूढ हुए। पुरोहित डिभम पर, तगुर पर अग्नि देव, महीष पर यम, नर पर नैरुत, वरुण मकर पर, हिरण पर वायु, कुबेर घोडे पर, बाकी लोग अपने अपने वाहनों पर पत्नी समेत आरूढ हुए हैं। तब हरि के आगे ब्रह्म के निकलने पर, उन के पीछे शिव, श्री सति बाएँ तरफ चलते विविध वाद्यों के बजते अतिशय कोलाहल के साथ, विविध प्रकार के कीर्तन करते, शेष के द्वारा छत्र पकडने पर, दाएँ और बाएँ वायु चामरों से हवा करते, सेनाधिपति भक्ति और मोद से अगुआ करने से सारे लोग शेषाद्री से उतर गए।

मानो धरती ने जनना है ऐसा सारे कपिलतीर्थ मार्ग से शुक महर्षि के आश्रम पहुँचते समय तब वह व्यासात्मज स्वामी की अगुवानी करते लिवा ले जाकर उन्हें एक सुंदर स्थल पर बिठाया। उन्होंने अपने निज योग प्रभाव से सारे लोगों को अनेक पदार्थों को समर्पित किया। साथ ही हरि, हर और ब्रह्मादियों को भोज दिया। उस अष्टमी दिन की रात को हरि गंधर्व किन्नेरों के गान को सुना है। साथ ही रंभा आदि अप्सराओं की नाच को देखा। साम गान सुन सुन कर थक कर कुसुम शय्या पर थोडी देर लेट कर आराम किया। तदुपरांत अगले दिन नारायणवनपुर के समीप पहुँच गए। तब आकाश राज ने अपने हित मंत्री, पुरोहित समेत चतुरंग बलों के साथ आकर चक्री की अगुवानी की है। साथ ही पूजा आदि सत्कर्म किया। गली की परिक्रमा के रूप में हरि की शोभा यात्रा निकाली गयी। तब सब को लिवा लाकर पडाव-आवास पर पहुँचाया गया। फिर आकाश राज अपने निजी मंदिर को लौट गया। उसने तोंडमान को हरि के पास भेजा। उसने हरि, हर, ब्रह्मादि को भोजन करवाया। तांबूल आदि दिलाकर वह अपने निजी गृह लौट गया। वहाँ गुरु वाक्यानुसार आकाश राज ने मंगल स्नान करके नवग्रह यज्ञ करके विवाह कृत्य को आरंभ किया। सूर्यास्त होने पर हरि के साथ पडाव में रहनेवाले ब्रह्मादि ने आराम किया। अगले दिन सूर्योदय हुआ। सभी ने उठकर स्नान संध्यादि नित्य नैमित्तिक कृत्य पूरे किए। तदुपरांत हरि ने स्नान संध्यादि पूरा करके संतोष के साथ वसिष्ठ मुनि को देखकर कहा। ''मैं, लक्ष्मी, ब्रह्म, आप, वकुला मालिका भोजन किए बिना निष्ठा के साथ रहना है न। उसी प्रकार कन्या को देनेवाले आकाश राज, धरणीदेवी, कन्या, तोंडमान, पुरोहित सुरों के गुरु को भोजन किए बिना रहना है, ऐसा नियम होना चाहिए। बाकी सभी भोजन कर सकते हैं। इसलिए शीघ्र ही ब्राह्मण-भोजन की तैयारी करवाइए।'' हरि की इन बातों को सुन कर वसिष्ठ ने कुबेर को इस पूरे वृत्तांत को बताकर भेजा। कबेर ने जाकर उपवास नियम और संतर्पण की रीति आदि के बारे में आकाश राज को बताया। राजा ने इसे स्वीकार किया। उसने दोपहर के लिए ब्राह्मण संतर्पण की तैयारियाँ करवायीं। प्रत्येक को तांबूल के साथ एक एक निष्कम को दक्षिणा के रूप में दिलाया। साथ ही यह बताया कि सूर्यास्त के बाद तेरह घडियों को मुहूर्त है। इस के लिए आवश्यक मंगल द्रव्यादि को विवाह के लिए तैयार रखने के लिए कहा। इस काम के लिए उसने आवश्यक सेवकों की नियुक्ति भी करवायी।

क्रमशः

मत्स्यजयंती

- डॉ सी आदिलक्ष्मी

मत्स्य जयंती हिंदू धर्म में भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला एक पर्व है। यह पर्व चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु ने प्रलय से पृथ्वी और वेदों को बचाने के लिए मछली का रूप धारण किया था।

हयग्रीव की कथा - इस सृष्टि के निर्माता भगवान ब्रह्म ने चारों वेदों की रचना की थी। एक बार ब्रह्माजी निद्रामग्न में थे। तभी हयग्रीव नामक दैत्य वेदों को चुराकर ले गया। जैसा ही वेद हयग्रीव के पास पहुँचे इस जगत में पाप और अधर्म छा गया।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, धरती पर एक प्रतापी राजा हुआ करते थे जिनका नाम सत्यव्रत था। एक बार वो कृतमाला नदी में स्नान करने केलिए पहुँचे। स्नान के उपरांत जब वो अपनी अंजली में जल भरकर सूर्य देव को अर्घ्य दे रहे थे तभी उनके हाथ में जल के साथ एक मछली आ गई। सत्यव्रत ने मछली को गौर से देखा और उसे नदी के जल में पुनः छोड़ दिया। इस पर मछली ने राजा से कहा कि इस नदी में बड़े-बड़े जीव रहते हैं, वो मुझे खा जाएँगे। कृपया मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए। मछली की मीठी बातों से राजा का हृदय पसीज गया और राजा उस मछली को अपने कमंडल में रखकर घर ले आए। अगले दिन जब राजा सत्यव्रत सोकर उठे तब मछली का शरीर इतना बड़ा हो चुका था कि कमंडल भी छोटा पड़ने लगा। कुछ दिनों के बाद उस मछली को समुद्र में डाला। तब सत्यव्रत हाथ जोड़कर मछली के सामने खड़े हो गए और उन्होंने उस मछली से पूछा कि 'आप कौन है?' तब भगवान विष्णु ने अपना परिचय दिया और सत्यव्रत को बताया कि मैंने इस धरती में हयग्रीव नामक दैत्य का वध करने केलिए अवतार लिया है। हयग्रीव ने छल कपट से वेदों को चुरा लिया है, जिससे चारों तरफ अज्ञानता और अधर्म फैल गया है। प्रलय में सम्पूर्ण पृथ्वी जल से मग्न हो जाएगी। इस संसार में जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं बचेगा। तब आपके पास एक नाव पहुँचेगी, उस नाव में आप सृष्टि सृजन के सभी बीज, जरूरी अनाज, औषधि के अलावा सप्त ऋषियों को लेकर उसमें सवार हो जाएँ। जब आप यह कर लेंगे तब मैं एक बार फिर आपसे मिलूँगा। सत्यव्रत ने भगवान का आदेश स्वीकार कर लिया। जब सातवें दिन प्रलय आने लगा तब समुद्र का पानी सभी जगह

फैलने लगा। सब कुछ जलमग्न होने लगा। भगवान के आदेश के अनुसार सत्यव्रत ने सभी जरूरी चीजों के साथ सप्तऋषियों को सम्मानपूर्वक नाव पर चढ़ाया। चारों तरफ धरती जलमग्न हो चुकी थी, पानी के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। इस बीच राजा सत्यव्रत और मत्स्य रूप धारण किए हुए भगवान विष्णु के बीच संवाद हुआ, यह संवाद आज भी मत्स्यपुराण के रूप में उपलब्ध है। भगवान विष्णु के दर्शन पाकर राजा सत्यव्रत और सप्तऋषि धन्य हो गए। जब प्रलय का प्रकोप समाप्त हुआ तब भगवान विष्णु ने हयग्रीव का वध करके उससे सभी वेद वापस ले लिए और इस सृष्टि के सृजनकर्ता ब्रह्माजी को सौंप दिए। इस प्रकार भगवान विष्णु ने मत्स्य का रूप धारण करके इस सृष्टि तथा वेदों को नष्ट होने से बचाया, साथ ही इस जगत के प्राणियों का कल्याण किया।

मत्स्य जयंती का महत्व :

रक्षा का प्रतीक :

भगवान विष्णु ने अपने मत्स्य अवतार में राजा मनु की सहायता की थी, जब प्रलय आ रही थी। उन्होंने मनु को नाव बनाने और उसमें सभी जीवों को सुरक्षित रखने का निर्देश दिया था।

सृष्टि की रक्षा :

मत्स्य अवतार ने राजा मनु और अन्य जीवित चीजों को हिमालय की चोटी पर सुरक्षित पहुँचाया और वेदों को भी वापस सुरक्षित किया।

ज्ञान और धर्म का पुनरुद्धार :

प्रलय के बाद भगवान विष्णु ने दानव हयग्रीव का वध किया और वेदों को पुनःप्राप्त किया ताकि नई सृष्टि की शुरुआत हो सके।

सतयुग में पाप और अधर्म केलिए कोई जगह नहीं थी। इस युग में भगवान विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह और नरसिंह अवतार हुए। मत्स्य पुराण के अनुसार इस दिन मत्स्य अवतार में भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। इसे हयपंचमी भी कहा जाता है। इस दिन भगवान विष्णु ने मध्याह्नोत्तर वेला में पुष्पभद्रा तट पर मत्स्यावतार धारण कर जगत्कल्याण किया था।

पूजा विधि :

सुबह जल्दी उठकर स्नान करके इस दिन भगवान श्रीहरि विष्णु जी के नाम से उपवास रहकर पूजा, अर्चना व आराधना करना चाहिए। पूजा के दौरान इस मंत्र का जाप करना चाहिए। 'ॐ मत्स्यरूपाय नमः' इस मंत्र का जाप करें।

भारत असंख्य कथाओं और मिथकों का देश है। ऐसी ही एक कथा भगवान विष्णु के मस्यावतार की है। भगवान विष्णु को संसार का रचयिता माना जाता है। संसार को दुष्टों के हाथों से बचाने केलिए भगवान विष्णु मत्स्यावतार की है। मत्स्यावतार भगवान विष्णु के दस प्रमुख अवतारों में से पहला अवतार है। संस्कृत में मत्स्य शब्द का अर्थ मछली होता है और अवतार का अर्थ पुनर्जन्म होता है। किंवदंतियों के अनुसार भगवान विष्णु ने संसार को विपत्ति से बचाने केलिए मत्स्यावतार लिया था। मत्स्य अवतार को चतुर्भुजी आकृति द्वारा दर्शाया गया है। ऊपरी भाग मछली के शरीर का प्रतीक है। इस अवतार की चार भुजाएँ थीं। दो भुजाओं में चक्र और शंख था। अन्य दो भुजाओं में संसार की रक्षा और वरदान देने केलिए कमल या गदा धारण की हुई थी। मत्स्य अवतार की कथा - सतयुग में 'तारामसलता' नाम का एक राजा था। प्राचीन काल में वह द्रविड राज्य पर शासन करता था। वह मणि के नाम से भी जाना जाता था और भगवान विष्णु का परम भक्त था। एक दिन तारामसलता नदी में हाथ धो रहा था कि अचानक एक छोटी मछली उसके हाथों पर तैर कर आ गई और उससे अपनी

जान बचाने की गुहार लगाने लगी। इस अनुरोध को मानते हुए राजा ने मछली को एक छोटे से घड़े में रख दिया। मछली बढ़ने लगी। यह देखकर कि वह घड़े से बड़ी हो गई है, राजा ने उसे बचाने केलिए पहले तालाब में फिर नदी में और फिर समुद्र में ले गए। मछली के वेश में भगवान विष्णु अपने वास्तविक रूप में आए और राजा से कहा कि अगले सात दिनों में दुनिया को नष्ट करने केलिए बाढ़ आएगी। भगवान ने राजा को बीज जड़ी-बूटियाँ, पशु और महर्षियों को एक स्थान पर एकत्रित करने का आदेश दिया। उन्होंने राजा को पृथ्वी पर विद्यमान वनस्पतियों और जीवजंतुओं को एक नाव में एकत्रित करने की भी सलाह दी। भगवान विष्णु ने उन्हें नियत समय पर मिलने का वचन दिया। भगवान विष्णु के मत्स्यावतार ने नाव को अपने साथ ले लिया। भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार एक मानव धड़ के रूप में लिया था जो एक मछली के पिछले आधे हिस्से से जुडा हुआ था। शतपथ ब्राह्मण जैसे प्राचीन हिंदू ग्रंथों में मत्स्यावतार का उल्लेख मिलता है। भगवान विष्णु ने धर्मपरायण और प्रथम पुरुष मनु को बचाने केलिए मत्स्यावतार लिया था। उन्होंने मनु को एक विशाल नाव बनाने की सलाह दी थी।

मत्स्य शब्द संस्कृत शब्द 'मत्स्य' से लिया गया है जिसका अर्थ है ''मछली''। मत्स्य शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। यह मच्छ से जुड़ा है जिसका अर्थ है मछली। भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार की कथा भागवत पुराण में वर्णित है। कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने पृथ्वी को भीषण बाढ़ से बचाने केलिए मत्स्य अवतार लिया था, जिससे पृथ्वी ग्रह पर जीवन की निरंतरता सुनिश्चित हुई। यह भी कहा गया है कि भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार के रूप में वेदों और अन्य पवित्र ग्रंथों को राक्षस हयग्रीव से बचाया था।

भारत में मत्स्य अवतार मंदिर :

भारत में बहुत कम मंदिर है जो भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार को समर्पित है।

वे है : वेदनारायण स्वामी मंदिर, चित्तूर, आंध्रप्रदेश; मत्स्य नारायण स्वामी मंदिर, बेल्लारी, कर्नाटक।

श्री मत्स्य स्तोत्रम् :

नूनं त्वं भगवान् साक्षाद्धरिर्नारायणोव्ययः।
अनुग्रहाय भूतानां धत्से रूपं जलौकसाम्।
नमस्ते पुरुष श्रेष्ठ स्थित्युत्पत्यप्ययेश्वर।
भक्तानं नः प्रपन्नानां मुख्यो ह्यात्मगतिविभो।।

मत्स्य स्तुति भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार की स्तुति है, जिसमें भगवान विष्णु के मछली रूप का वर्णन और उनकी महिमा का गान किया जाता है। यह स्तोत्र भक्तों को जलप्रलय से बचाने और वेदों की रक्षा केलिए किए गए भगवान के कार्यों के प्रति आभार व्यक्त करने में मदद करता है।

नमस्ते पुरुष श्रेष्ठ :

स्तुति की शुरुआत भगवान विष्णु के पुरुषश्रेष्ठ और स्थित्यत्पत्यप्ययेश्वर (सृष्टि के रक्षक) के रूप में वंदना से होती है।

लीलावतार :

इसमें कहा गया है कि भगवान विष्णु के सभी लीला अवतार प्राणियों के कल्याण केलिए हैं।

अद्भुत रूप : स्तुति में भगवान के अद्भुत और विस्मयकारी रूप की महिमा का वर्णन किया गया है।

यह स्तुति भक्तों को धर्म और वेदों की रक्षा केलिए भगवान के कार्यों की याद दिलाती है। यह एकाग्रता और आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने में भी सहायक हो सकती है।

सर्ववेदमयश्रेष्ठ धामधारणकारण।
सुरौघपरमेशान नारायण सुरेश्वर
तद्बीजम्भवतस्तेजस्त्वथोक्तं सलिलेषु च,
सर्वाधारो निराधारो निर्हेतुः, सर्वकारणम्।।
नमस्ते मीनमूर्ते हे नमस्ते भगवन्हरे।
नमस्ते जगदानंद नमस्ते भक्तवत्सल!
मायामीनतनो स्तनोतु भवतां पुण्यानि पड्कस्थितिः
पुच्छाऽछोटसमुच्छल गुरुप्रग्भाररिक्तोदधेः
पातालावटमध्यसङ्कटतया पर्याप्तकष्टस्थितेः।
वेदोद्धारपरायणस्थ सततं नारायणस्य प्रभोः।।

मत्स्यपुराण :

मत्स्यपुराण में भगवान श्रीहरि के मत्स्य अवतार की मुख्य कथा के साथ अनेक तीर्थ व्रत, यज्ञ दान आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। मनु और मत्स्य के संवाद से शुरू होकर ब्रह्माण्ड का वर्णन ब्रह्म देवता और असुरों का पैढा होना, मरुद्गणों का प्रादुर्भाव इसके बाद राजा पृथु के राज्य का वर्णन वैवस्वत मनु की व्रत और उपवासों के साथ मार्तण्डशयन व्रत, द्वीप और लोकों का वर्णन देव मन्दिर निर्माण, प्रसाद निर्माण आदि का वर्णन है।

मत्स्यपुराण परम पवित्र होने के साथ साथ सभी शास्त्रों का शीर्षस्थ अद्भुत ज्ञान पूर्ण पुराण है। यह श्रोता वक्ता न केवल सभी पापों को दूर करता है अपितु उन्हें सभी प्रकार के कल्याण को भी प्रदान करता है। मत्स्यपुराण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सरल और सिद्ध समाधान है। मत्स्यपुराण वैष्णव, शाक्त, सौर शैव सभी सम्प्रदाय के मध्य पूज्य है। यह पुराण परम पवित्र आयु की वृद्धि करने वाला कीर्ति वर्धक, महापापों का नाश करने एवं यश को बढ़ाने वाला है। इस पुराण की एक दिन की भी यदि व्यक्ति कथा सुनने वह भी पापों से मुक्त होकर श्रीमद्नारायण के परम धाम को चला जाता है।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)
FORM IV
See Rule 8

1. Place of Publication	:	TIRUPATI
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sri R.V.Vijayakumar, M.A.B.Ed.,
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Dy.E.O.,T.T.D.Press Building, K.T.Road, Tirupati - 517 507.
4. Publisher's Name	:	**Dr.V.G.Chokkalingam,** M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor (FAC), Chief Editor Office, T.T.D. Press Building, 2nd Floor, K.T.Road, Tirupati - 517 507.
5. Editor's Name	:	**Dr.V.G.Chokkalingam,** M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Building, 2nd Floor, K.T.Road, Tirupati - 517 507.
6. Name and address of individuals who own the News paper and partners or share holders holding more than one percent of the Total Capital		Tirumala Tirupati Devasthanams

I, V.G.Chokkalingam, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 28-2-2026

(Sd.) Dr.V.G.Chokkalingam
Signature of the Publisher

श्रीनिवासमंगापुरम्

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी का पुष्पयाग महोत्सव

दि.15-03-2026

श्री कूरेश विरचित श्रीस्तव

अवतारिका

श्री रामानुजाचार्य के आन्तरंगिक शिष्यों में कूरेश एक हैं। वे विशिष्टाद्वैत धर्मप्रचार करने वाली परंपरा से संबंधित हैं। इनकी कृति 'पंचस्तवी' का आखरी स्तोत्र 'श्रीस्तव' है। श्रीरंगम् में श्रीरंगनायकी का वैभव इस 'श्रीस्तव' स्तोत्र से विदित होता है। इस स्तोत्र में श्रीसूक्त एवं विष्णुपुराण में इन्द्रकृत श्रीस्तुति, यामुनाचार्य की चतुःश्लोकी इत्यादि ग्रन्थों में वर्णित विषयों का स्पष्ट एवं रम्य वर्णन विस्तार रूप से विद्यमान है। इस स्तोत्र 'श्री लक्ष्मीजयंती' के अवसर पर सप्तगिरि पाठकों केलिए...

कूरेश की स्तुति करने वाला श्लोक -

श्रीवत्सचिह्नमिश्रेभ्यो नम उक्ति मधीमहे। यदुक्तय स्त्रयीकण्ठे यांति मङ्गलसूत्रताम्।।

जिनकी सूक्तियाँ वेदमाता के कंठ में मंगलसूत्र बन जाती है, उस श्रीवत्समिश्र के विषय में हम नमस्कारों का अध्ययन कर रहे हैं।

स्वस्ति श्री र्दिशता दशेषजगतां सर्गोपसर्गस्थितीः स्वर्गं दुर्गति मापवर्गिकपदं सर्वं च कुर्वन् हरिः।
यस्या वीक्ष्य मुखं तदिंगितपराधीनो विधत्तेऽखिलम् क्रीडेयं खलु नान्यथाऽस्य रसदा स्यादैकरस्यात्तया।। 1

श्रीहरि लक्ष्मी की तरफ देखकर, उनकी अनुमति से सृष्टि, स्थिति, लय कार्य करते हैं। जीवों को स्वर्ग, नरक, मोक्ष को प्रदान करते हैं। श्रीहरि को संतुष्ट करनेवाले लक्ष्मी हमारे लिए कल्याणकारिणी है।

हे श्रीर्देवि! समस्तलोकजननि! त्वा स्तोतु मीहामहे! युक्तां भावय भारतीं प्रगुणय प्रेमप्रधानां धियम्।
भक्तिं बन्धय नंदयाश्रित मिमं दासं जनं तावकम् लक्ष्यं लक्ष्मि! कटाक्षवीचिविसृते स्ते स्याम चामी वयम्।। 2

हे लक्ष्मी! सभी भुवनों की माता होने के नाते हम आप की स्तुति करना चाहते हैं। हम तुम्हारे दास हैं। तुम्हारे करुणा-कटाक्ष रूपी तरंगों का लक्ष्य हमे बना दीजिए!

स्तोत्रं नाम कि माममन्ति कवयो यद्यन्यदीयान् गुणान् अन्यत्र त्वसतोऽधिरोष्य फणितिः, सा तर्हि वन्ध्या त्वयि।
सम्यक्सत्यगुणाभिवर्णन मथो ब्रूयुः, कथं तादृशी वाग्वाचस्पतिनाऽपि शक्यरचना त्वत्सद्गुणार्णोनिधौ।। 3

लक्ष्मी! कवि लोग स्तोत्र किस को कहते हैं? एक व्यक्ति के गुणों को दूसरे व्यक्ति में आरोपित करते है, तब उस को स्तोत्र कहते हैं। ऐसा हम नहीं कर सकते। सकलगुण तुम्हारे मन में विद्यमान है। हम उनका वर्णन नहीं कर सकते। क्योंकि आप के गुणों के सागर का वर्णन करना बृहस्पति के लिए भी संभव नहीं।

ये वाचां मनसां च दुर्ग्रहतया ख्याता गुणा स्तावकाः तानेव प्रति सांबुजिह्व मुदिता हे मामिका भारती।
हास्यं तत्तु न मन्महे न हि चकोर्येकाऽखिलां चन्द्रिकां नालं पातु मिति प्रगृह्य रसना मासीत सत्यां तृषि। 4

मन से, वचन से आप के गुणों का वर्णन नहीं कर सकते। चकोर पक्षी सारी चांदिनी को पीना संभव नहीं मान कर छोड़ देता है क्या? नहीं। अतः मैं यथाशक्ति गुणवर्णन का कार्य करता हूँ।

क्षोदीया नपि दुष्टबुद्धि रपि निस्स्नेहोऽप्यनीहोऽपिते कीर्तिं देवि! लिह न्नहं न च बिभेम्यज्ञो न जिह्रेमि च।
दुष्ये त्सा तु न तावता न हि शुना लीढ़ाऽपि भागीरथी दुष्येत् श्वाऽपि न लज्जते न च बिभेत्यार्ति स्तु शाम्ये च्छुनः।। 5

हे देवी! अज्ञानी हूँ। आप के प्रति भक्ति नहीं। तथापि भय, लज्ञा को छोड़कर आप की स्तुति करना चाहता हूँ, जिससे आप दूषित नहीं होती। कुत्ते के चाटने से क्या गंगा अपवित्र होती? कुत्ता भी गंगा को छूने में डरता नहीं। उस की प्यास भी बुझती है।

ऐश्वर्यं मह देव वाऽल्प मथवा दृश्येत पुंसां हि यत् तल्लक्ष्म्याः समुदीक्षणा त्तव यत स्सार्वत्रिकं वर्तते।
तेनैतेन न विस्मयेमहि, जगन्नाथोऽपि नारायणो धन्यं मन्यत ईक्षणा त्तव यतः स्वात्मान मात्मेश्वरः।। 6

मनुष्यों में ऐश्वर्य अधिक मात्रा में हो या स्वल्प मात्रा में यह आप के कटाक्ष से ही संभव है। तुम्हारे पति श्रीमन्नारायण भी आपकी कटाक्ष से अपने आपको धन्य मानते हैं।

ऐश्वर्यं यदशेषपुंसि यदिदं सौन्दर्यलावण्ययोः रूपं यच्च हि मङ्गलं कि मपि यल्लोके स दित्युच्यते।
तत्सर्वं त्वदधीन मेव यदतः श्रीसत्यभेदेन वा, यद्वा श्रीमदितीदृशेन वचसा देवि! प्रथा मश्नुते।। 7

लक्ष्मीदेवी! जीवों के ऐश्वर्य, सौंदर्य, लावण्य, मंगल - इन सब को आपकी वजह से पवित्रता मिलती है। अतः इनका वर्णन करते समय तुम्हारे नाम 'श्री' को या 'श्रीमत्' शब्द को जोड़ा जाता है।

देवि! त्वन्महिमावधि र्न हरिणा नाऽपि त्वया ज्ञायते यद्यप्येव, मथाऽपि नैव युवयो स्सर्वज्ञता हीयते।
यन्नास्त्येव तदज्ञता मनुगुणां सर्वज्ञताया विदुः व्योमाम्भोज मिदंतया किल विदन् भ्रान्तोऽय मित्युच्यते।। 8

लक्ष्मी! तुम्हारे वैभव का यथार्थ वर्णन न तो श्रीहरि कर सकते हैं, न आप! फिर आप की सर्वज्ञता इससे नष्ट नहीं होती। इस लोक में विद्यमान पदार्थों में वैभव भी एक है, जो किसी के समझ में नहीं आता। 'गगन कुसुम' की तरह इस को भ्रान्ति समझते हैं।

लोके वनस्पतिबृहस्पतितारतम्यं यस्याः प्रसादपरिणाम मुदाहरन्ति।
सा भारती भगवती तु यदीयदासी, तां देवदेवमहिषीं श्रिय माश्रयामः।। 9

इस दुनिया में अल्पज्ञान, अत्यधिक ज्ञान का तारतम्य आप की प्रसन्नता का ही फल है। श्रीमन्नारायण के महाराज्ञी लक्ष्मी के शरण में चला जाता हूँ।

यस्याः कटाक्षमृदुवीक्षणदीक्षणेन सद्यः समुल्लसितपल्लव मुल्ललास।
विश्वं विपर्ययसमुत्थविपर्ययं प्राक् तां देवदेवमहीषीं श्रिय माश्रयामः।। 10

पूर्व प्रलयकाल में लक्ष्मी देवी के कटाक्ष के अभाव में पूरा विश्व बुझ गया था। उस देवदेव की महाराज्ञी लक्ष्मी के शरण में आ रहा हूँ।

यस्याः कटाक्षवीक्षा क्षणलक्ष्यं लक्षिता महेशाः स्युः। श्रीरंगराजमहिषी सा मा मपि वीक्षतां लक्ष्मीः।। 11

जिस देवी के कटाक्षवीक्षण का लक्ष्य बनने मात्र से लोग राजा बन जाते हैं, ऐसी देवी लक्ष्मी का कटाक्ष मेरे ऊपर भी प्रसारित हो। हमें, भगवान की सेवा करने का मौका लक्ष्मी की कृपा की वजह से ही मिलता है। इस श्लोक से कूरेश की लक्ष्मीस्तुति समाप्त होती है।

इस स्तोत्र के पाठ से सभी प्रकार के ऐश्वर्यों की, सुखों की प्राप्ति होती है।

सर्वेजनाः सुखिनोभवन्तु!

तेलुगु मूल : डॉ.ई.ए.शिंगराचार्युलु हिन्दी अनुवाद : डॉ.के.सुधाकर राव

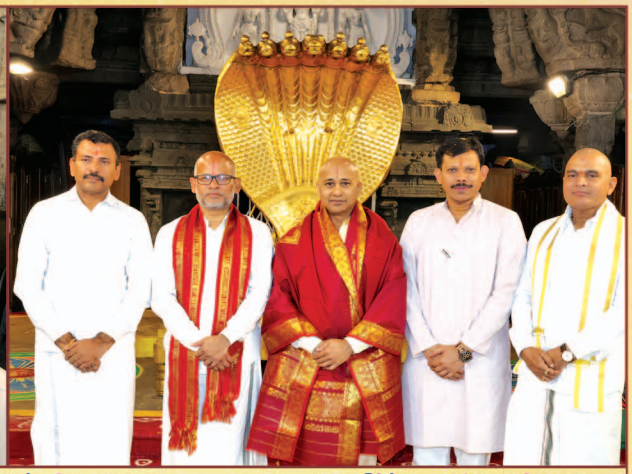

श्री ए.रविचंद्रा, आई.ए.एस., जी 1996 ब्याच का है। (आंध्रप्रदेश क्याडर का व्यक्ति हैं।) उन्होंने आंध्रप्रदेश में कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर कार्य किया है; जिनमें वित्त, सामाजिक कल्याण, स्वास्थ्य और मुख्यमंत्री कार्यालय जैसे प्रमुख विभागों का कार्यभार संभालना शामिल है। वे मुख्यमंत्री के विशेष मुख्य सचिव के रूप में कार्यरत हैं। इन्होंने सहायक कलेक्टर के पद पर आसिफाबाद, आदिलाबाद जिला, तेलंगाना में काम किया; संयुक्त कलेक्टर, आर.आर.हैदराबाद में; कलेक्टर, नेल्लूर में; कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, चित्तूर और पूरब गोदावरी में काम किया है। उपाध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ए.पी.एच.एम. एवं एच.आई.डी.सी., हैदराबाद में; आं.प्र.प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सदस्य सचिव के पद में भी कार्य किया। सरकार के सचिव, वित्त(व्यय); सरकार के सचिव, समाज कल्याण; और सरकार के सचिव, जनजातीय कल्याण विभाग में भी काम किया। सरकार के सचिव (कोविड-19 प्रबंधन एवं टीकाकरण), स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं परिवार कल्याण विभाग के साथ सरकर के प्रधान सचिव (कोविड-19 प्रबंधन एवं टीकाकरण), स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं परिवार कल्याण विभाग और सरकार के प्रधान सचिव, महिला, बाल, विकलांग एवं वरिष्ठ नागरिक पद में भी कार्य किया।

ति.ति.दे. का नूतन ई.ओ.

दि.06-02-2026 को भगवान जी के दर्शनानंतर ति.ति.दे. का नूतन ई.ओ. के पद का कार्यभार को स्वीकारते हुए श्री एम.रविचंद्रा, आई.ए.एस. जी ने शपथ ग्रहण करते हुए दृश्य। और साथ-साथ ति.ति.दे. न्यास-मंडली के पदेन सदस्य के रूप में भी नूतन ई.ओ. ने कार्यभार को स्वीकार लिया। इस संदर्भ में ई.ओ. जी को वेदपंडितों ने वेदाशीर्वचन किया। अतिरिक्त ई.ओ. ने प्रसाद व चित्रपठ को नूतन ई.ओ. जी को सौंपा दिया। इस संदर्भ में अतिरिक्त ई.ओ., दोनों जे.ई.ओ. के साथ सी.वी. अण्ड एस.ओ. और अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया। इन्होंने सप्तगिरि मासिक पत्रिका के गौरव संपादक भी है। इस संदर्भ में इन्हीं को सप्तगिरि की ओर से हार्दिक स्वागत।

ति.ति.दे. का नूतन जे.ई.ओ.

दि.25-01-2026 को तिरुमल तिरुपति देवस्थान का नूतन जे.ई.ओ. (विद्या और वैद्य) के पद का कार्यभार को स्वीकारते हुए डॉ.ए.शरत, विश्रांत आई.ए.एस., जी ने शपथ ग्रहण करते हुए दृश्य। इस सदंर्भ में नूतन जे.ई.ओ. और उनके परिवार के लोग भगवान जी का दर्शन किया। तदनंतर मंदिर के अधिकारीगण ने तीर्थ-प्रसादों को नूतन जे.ई.ओ. को सौंपा दिया।

श्री प्रपन्नामृतम्

(62वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री रामानुजाचार्य का वैभव (३)

श्रीरंगनाथ श्री वेंकटेश आदि सभी भगवत्स्वरूपों के द्वारा प्रकाशित महान वैभव वाले यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्री नाथमुनि आदि पूर्वाचार्य से भी तत्वार्थ प्रकाश करने में श्रेष्ठ है। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है। यह बात समस्त वेद, शास्त्र, इतिहास, पुराणादि में सुस्पष्ट कही गयी है कि जिस प्रकार भगवान विष्णु के अनन्त अवतार ग्रहण करने पर भी पृथ्वी पर दस अवतारों को ही प्रधानता दी गई है। इनमें भी नृसिंह, राम, कृष्ण ये तीन अवतार ही मुख्य माने गये हैं। ऐसे ही तपोधन स्वाध्यायशील ऋषि मुनियों में भी व्यासादि मुनि ही प्रधान हुए हैं। भगवान के 108 दिव्यदेशों में भी श्रीरंगम्, वेंकटाद्रि, कांची और यादवाद्रि को ही मुख्य माना गया है। आल्वार सन्तों में भी सरोयोगी आदि 10 आल्वारों में से श्री शठकोप स्वामीजी ही प्रधान माने जाते हैं। इसी प्रकार श्री नाथमुनि, राममिश्र स्वामी आदि पूर्वाचार्यों में यतिराज श्री रामानुजाचार्य प्रमुख आचार्य माने गये हैं।

भक्तवत्सलता के कारण तत्काल स्तम्भ फाड़कर अवतार लेने, प्रह्लाद पर कृपा करने और वरदान देने एवं अत्याचारी हिरण्यकशिपु का वध करने का कारण श्री नृसिंह भगवान का प्राधान्य माना जाता है। ऐसे ही विभीषण तथा सुग्रीव के लिये अभय प्रदान करने तथा मल्लाह राजा गुह के साथ में मित्रता स्थापित करके, गृधराज जटायु का ब्रह्ममेध संस्कार करने, शबरी के हाथ से फलाहार करने और सुग्रीव-हनुमान आदि बन्दरों के साहचर्य-मित्रता करने से भगवान श्री रामावतार का प्राधान्य माना जाता है। संसार में गीतारूपी उपनिषद् का अर्जुन के माध्यम से विस्तृत उपदेश देने तथा प्राणिमात्र के हित के लिये चरमश्लोक का उपदेश करने एवं पाण्डवदूत बनकर भीष्म-द्रोण आदि समृद्धिशालियों के घर पर न जाकर भक्ति से पवित्र महात्मा विदुरजी के घर पर पधारकर, उनके यहाँ प्रेमपूर्वक भोजन करने और दुर्योधन के यहाँ जाकर ''शत्रु का अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिये'' यह स्पष्ट कहकर उनको शत्रुदल घोषित करने आदि लोकोत्तर कार्य करने के कारण भगवान श्रीकृष्ण का प्राधान्य माना गया है।

उक्त प्रकार से उपरोक्त तीन अवतारों की प्रधानता ज्ञान, भक्ति, बल, ऐश्वर्य, ओज और अमित तेज-इन छः ईश्वरीय गुणों की पूर्णता एवं समस्त प्राणियों की रक्षा के कारण से है।

भगवान श्रीरंगनाथ के अपने भक्त श्री मुनिवाहन को निगल लिया था। इस कारण से उनकी एवं श्रीरंगक्षेत्र की महिमा संसार में विशेष बढ़ गयी। ऐसे ही प्राचीन समय में श्री वेंकटेश भगवान भी अपने भक्त तोण्डमान चक्रवर्ती एवं कुरंगपूर्ण (कुर वरत नम्बि) से निरन्तर सम्भाषण किया करते थे, जिस कारण से श्री वेंकटेश भगवान की सर्वत्र प्रसिद्धि हुई। कांची के श्री वरदराज भगवान भी पहले कांचीपूर्ण स्वामी के साथ निरन्तर मुस्कराते हुए वार्तालाप करते थे। जिससे कांची नगरी भी समस्त संसार में प्रसिद्ध हो गयी। यादवाद्रि निवासी भगवान नारायण ने भी सदाचार शील उस राजपुत्र पर कृपा की और फिर उसके द्वारा अर्पित अन्न को ग्रहण करके उसके राज्य को बिलकुल निष्कण्टक बनाकर उसका वैभव बढ़ाया और फिर पृथ्वी पर चिरकाल तक उसकी रक्षा की। अपने सौशील्य स्वभाव के कारण यतिराज श्री रामानुजाचार्य का पुत्रत्व स्वीकार किया। जिसके कारण से यादवाद्रि सभी श्रीवैष्णव धामों में प्रमुख माना जाता है।

संसार की रक्षा में तत्पर भगवान श्री वेदव्यास ने चारों वेदों का विभाजन कर, ब्रह्मकाण्ड और कर्मकाण्ड के रूप में सविस्तार विभाजन किया कर्मकाण्ड को छोड़कर, ब्रह्मकाण्ड में मिलाकर छान्दोग्य पुरुषसूक्त, वाजसनेय, श्वेताश्तर एवं तैत्तिरीय आदि उपनिषद् आदि के सुगम ज्ञान के लिये इतिहास, पुराणों की रचना की। वेदों से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं है, और भगवान केशव से बढ़कर कोई देव नहीं है। इस प्रकार श्री व्यास ने वैदिक तत्त्वों का निर्णय किया। इससे सभी ऋषियों में उनकी प्राथमिकता सिद्ध हुई और पुराणों में पद्मपुराण आदि वैष्णव पुराण माने गये। मुनि नायक भगवान श्री पराशर ने पुराणरत्न श्री विष्णुपुराण को बनाया, जिसमें उन्होंने सम्यक्तया चित्-अचित् और ब्रह्म की विशद व्याख्या की, इसलिये श्री यामुनाचार्यजी ने भी पाराशर मुनि को उदार कहकर प्रणाम किया है। इस कारण पाराशर सर्वश्रेष्ठ ऋषि माने गये हैं।

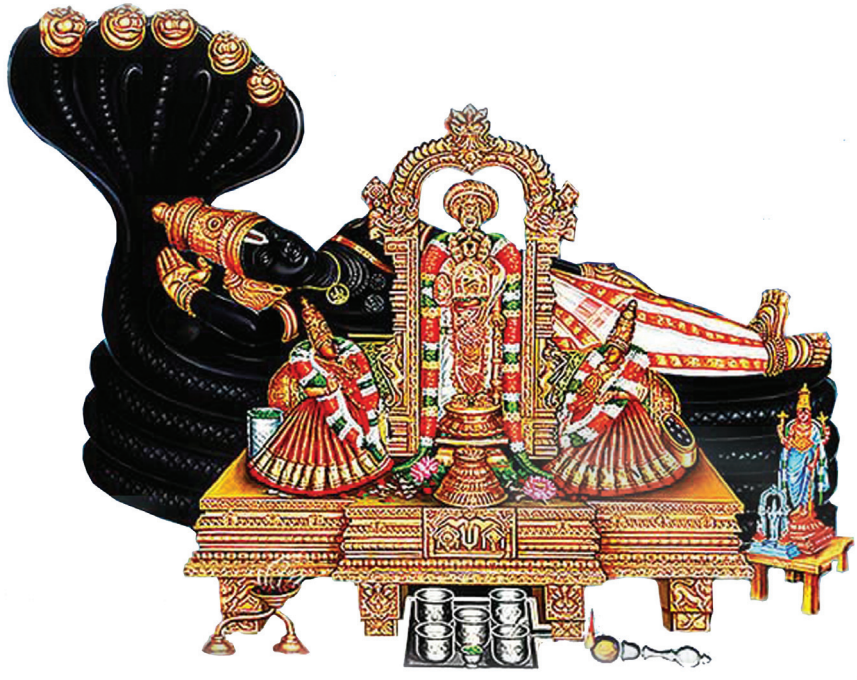

ब्रह्मर्षि भगवान श्री शुकदेवजी ने गंगा के पुनीत तट पर राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत महापुराण का पाठ सुनाते हुए स्पष्ट रूपेण नित्य तत्वों का निर्णय किया है, उन्हीं के आधार पर वे ''संसार-मुक्त'' कहे गये हैं।

भगवान श्री शौनक ऋषि ने विष्णुधर्मोत्तर पुराण में श्री विष्णु परतत्व का निर्णय अनेक स्थलों पर किया है। उन्होंने बताया है कि संसार के उद्भव, स्थिति और प्रलय के एक मात्र कारण श्री विष्णु ही हैं, वे ही पुरुषोत्तम हैं। ब्रह्म, शिवादि देवों के शासक भी और मोक्ष प्रदाता भी वही हैं। यही श्री शौनक महर्षि का तत्वनिर्णय था। अतः वे ऋषियों में मुख्य माने गये हैं। उनकी घोषणा है कि- ''जिनके बाहुमूल शंख चक्रांकित हैं, जिनकी वाणी में परम पुरुष परमात्मा विष्णु भगवान का नामोच्चारण हैं, जिनके मस्तक पर ऊर्ध्वपुण्ड्र है और जिनके कण्ठ में कमलाक्ष की माला है, ऐसे श्रीवैष्णवों का मैं दास हूँ।''

लोकपावन देवर्षि नारद ने स्पष्ट कहा है कि- ''मैं श्रीवैष्णवों का दास हूँ।''

महायोगी श्री शठकोप स्वामी ने सहस्त्र शाखाओं से संयुक्त दुर्लभ अर्थ सम्पति वाले वेद चतुष्टय के अर्थों को लेकर द्राविण भाषा में चार प्रबन्धों की सर्जना की, तथा उन्होंने फिर प्रसन्न होकर समाधि की दशा में ही श्री नाथमुनि को उपदेश देते हुए दर्शन शास्त्र के तात्पर्य का स्पष्टतया समझाया। परिणाम स्वरूप वे भी भागवत श्रेष्ठ माने गये।

श्रीरंगराज आदि जो गण्य मान्य हैं। उनमें जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं, उन्होंने संसार को अभय प्रदान करने के लिये भगवान गीताचार्य के द्वारा कथित तत्वार्थ स्वरूप चरमार्थ का विशद प्रकाशन कर, ऋषियों के द्वारा कथित प्रमाणों की व्याख्या कर संसार रक्षा के लिये श्री शठकोपादि आचार्यों के द्वारा रचित दिव्य प्रबन्धों के तत्त्वार्थों का उपदेश देकर एवं श्री नाथमुनि आदि आचार्यों के श्री शठकोप आदि योगियों के तत्त्वार्थों को ग्रहण कर लोक कल्याणार्थ व्यास सूत्रों पर श्री भाष्यादि विपुल ग्रन्थों की रचना की। अनेकों विघ्नों का सामना करते हुये शास्त्रार्थ द्वारा सभी प्रान्तों के विद्वानों को जीतकर अपने सिद्धान्त को स्थापित कर श्रीवैष्णव (विशिष्टाद्वैत) दर्शन को वेदमूलक सिद्ध किया। इसीलिये वह दर्शन श्री रामानुज दर्शन के नाम से विख्यात हुआ। उक्त कार्यों को सम्पन्न करने के कारण लोक हितैषी यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्री नाथादि गुरुओं की अपेक्षा श्रेष्ठ माने जाते हैं। अपने गुरुओं से श्रेष्ठ होने के कारण श्री यतिराज, दाशरथि आदि शिष्यों एवं समस्त लोकों द्वारा पूजित हुए और उन्होंने अपने शरणागत सभी जीवों को मोक्ष प्रदान कर संसार का कल्याण किया।

।। श्री प्रपन्नामृत का 62वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

जनवरी-2026 महीने का क्विज-42 के समाधान

1) मकर राशि, **2)** जप, तप, दान,

3) भगवान सूर्य, **4)** पुरंदर दास,

5) माघ मास शुद्ध सप्तमी, **6)** माँ सरस्वती,

7) वसंत पंचमी, **8)** वेदालय विमान,

9) श्रीहरि लक्ष्मी, **10)** Mentha Arvensis Linn,

11) हेमकूट विमान, **12)** शाम्ब,

13) 1470, **14)** अन्नमय्या,

15) अन्नमय्या.

अयोध्या के प्रभु श्रीराम

- डॉ. एच. एन. गौरीराव

श्रीराम का जन्म लोकोद्धार के लिए हुआ था। भगवान राम को भगवान विष्णु का सातवाँ अवतार माना जाता है। धर्म की रक्षा, दुष्टों की शिक्षा और सज्जनों के कल्याण के लिए श्रीराम का जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी को सुबह पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ था। इस दिन को श्रीराम नवमी के रूप में त्यौहार मनाया जाता है। रावण जितना पराक्रमी राजा था, उतना ही अहंकारी और अधर्मी था। वह तीनों लोकों को सताने लगा; सीता माता का अपहरण किया। श्रीराम ने रावण का वध करके धर्म का पुनरुद्धार किया। यद्यपि श्रीराम विष्णु के अवतार हैं, फिर भी वे एक मानव की तरह अनेक कष्टों को झेला। पर उन्होंने धर्म को कभी नहीं छोड़ा। इन्हीं गुणों से वे सकलगुणाभिराम कहलाये। अब हम श्रीराम के उन गुणों के बारे में जानेंगे...

पारिवारिक मौल्य :

प्रभु श्रीराम ने आदर्श परिवार तथा सामाजिक सत्संबंधों को सदा निभाया, जिसकी नींव उनके बचपन में ही पड़ी। वे दशरथ और कौसल्या के पुत्र होने पर भी, उनको तीनों माताओं का प्यार समान रूप से मिला। इसलिए वे अपने पिता और माताओं को हमेशा विनम्रतापूर्वक गौरव करते थे। एक आदर्श पुत्र के अलावा भगवान राम एक आदर्श भाई भी थे। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को अत्यंत प्यार करते थे। इससे वे भाई भी अपने प्रिय राम के प्रति अतीव गौरव रखते थे। राम वनवास जाते समय लक्ष्मण भी उनके साथ वन जाते है। माता कैकेई को दिए गए वचन के अनुसार

श्रीराम ने भरत को अपना राज्य सौंपा। भरत ने सिंहासन पर बड़े भाई राम की चरण पादुका रखकर राज्य भार संभाला। तत्कालीन समाज में बहुपत्नित्व प्रचलन में था। पर श्रीराम ने एक पत्नीव्रत का पालन किया। श्रीराम अपनी पत्नी सीता से अत्यंत प्यार करते थे। इसीलिए वनवास के समय में भी सीता माता को बड़ी सतर्कता से देखभाल करते थे। सीतापहरण के बाद रावण से युद्ध करके सीता माता को वापस लाये। दोनों ने अनेक मुसीबतों का सामना किया, पर एक दूसरे के प्रति प्रेम, सम्मान और विश्वास को बनाए रखा।

शांति, संयम और के गुण :

श्रीराम का जन्मजात गुण है शांति और संयम। यह स्वाभाविक गुण होने से उनमें असामयिक क्रोध नहीं दिखाई पड़ता है। इसलिए उनके निर्णय श्रेष्ठ ही होते हैं। अपने पूरे जीवन में उन्होंने अनेक मुश्किलों का सामना किया, पर वह कभी भी अपने संयम और शांति को नहीं खोया। जैसे श्रीराम के राज्याभिषेक के लिए सब तैयारियाँ हो चुकी थी, पर उन्हें 14 साल तक वन जाना पड़ा, तो वे दुखित नहीं हुए, किसी को दोषी नहीं ठहराया। वे सब सुख सुविधाओं को छोड़कर वन की ओर चल पड़े। वे एक संन्यासी की तरह जीवन जिया, जो आसान काम नहीं था। वनवास के समय सीता माता का अपहरण हुआ तो वे स्थिर चित्त से अन्वेषण करने निकले। रावण

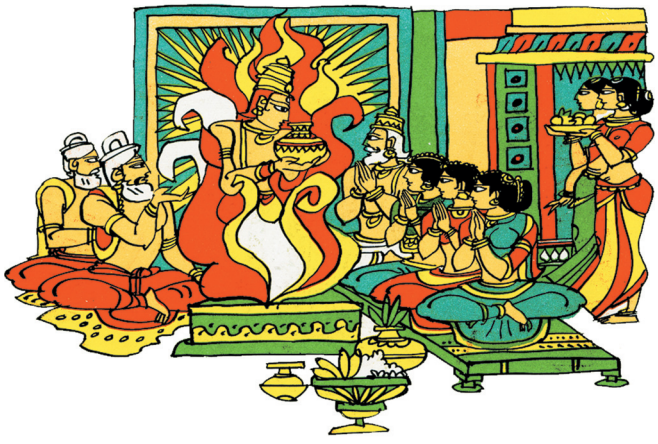

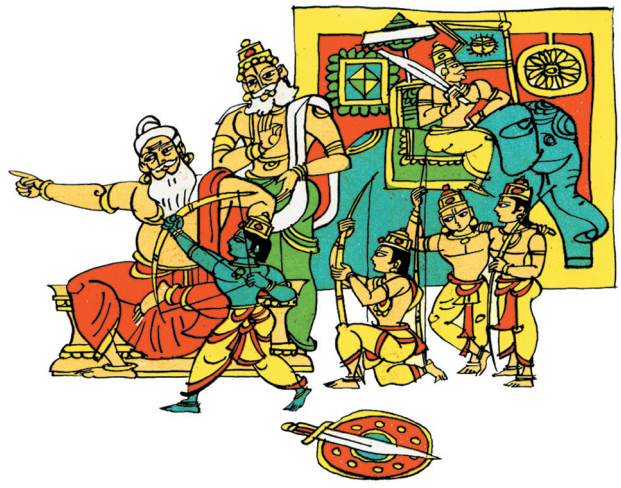

से युद्ध करने से पहले सेतु निर्माण के लिए समुद्र से रास्ता मांगा। तीन दिन तक प्रतीक्षा करने के बाद ही समुद्र पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने तैयार हो गए। उन्हें मालूम था कि जो काम शांति से हो सकता है, वहाँ शक्ति प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है। वे वैयक्तिक रूप से किसी से क्रोध नहीं करते थे। अगर उनका क्रोध है तो सिर्फ अधर्म पर। वे जानते थे कि रावण ब्रह्मज्ञानी है। केवल वह अधर्मी बनने से उनका अंत करना पड़ा। युद्ध क्षेत्र में वे लक्ष्मण को मरणासन्न रावण के पास जाकर शिक्षा लेने की सलाह देते है। श्रीराम को मानव से दैवत्व प्राप्त करानेवाले गुणों में विनम्रता एक है, जिससे वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। वनवास के दौरान उन्होंने अनेक ऋषि-मुनियों की बड़ी विनम्रता पूर्वक सेवा की और उनसे विद्या और आशीर्वाद प्राप्त किया और परशुराम के क्रोध को भी शांत किया।

समर्थ नायक :

हर एक मानता है कि श्रीराम में समर्थ नायक के गुण भरे पूरे मिलते हैं। वे एक निस्वार्थी, पारदर्शी, निष्पक्षपाती तथा बुद्धिमान नायक है। उन्होंने वाली के वध के पश्चात सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाया। लंका को जीतने के बाद वह देश अत्यंत समृद्ध होने पर भी विभीषण को राजा बनाया। उनका उद्देश्य केवल धर्म

स्थापना ही था। मारीच जो राम का शत्रु है, वो भी राम की प्रशंसा करता है- 'रामो विग्रहवान् धर्मः।' अर्थात भगवान श्रीराम धर्म के मूर्त स्वरूप है। अयोध्या के प्रभु श्रीराम से लोग अत्यंत प्यार करते थे। इससे वन गमन केलिए निकलते तो श्रीराम के साथ बहुत दूर तक चलते हैं। नायक का एक और गुण होता है सत्यासत्य को परखने की शक्ति। क्योंकि वाली का वध राम ने किया तो इसलिए कि वह एक अधर्मी था; अपने भाई सुग्रीव को उसने धोखा दिया था और उसकी पत्नी से बलपूर्वक विवाह किया था। वैसे ही श्रीराम ने सेना के वरिष्ठों के विरोध के बावजूद रावण के भाई विभीषण को अपना मित्र बनाया। यहाँ श्रीराम ने एक बुद्धिमानी निर्णय लिया, जो अंत में कल्याणकारी साबित हुआ। क्योंकि विभीषण ना होते तो लंका पर विजय प्राप्त करना आसान नहीं होता था। श्रीराम एक कुशल प्रबंधक भी थे। वे सब को साथ लेकर चलते थे। वे अपनी सेना के विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न कौशलों, शक्ति और युक्ति को भी अच्छी तरह से जानते थे। इससे सीतान्वेषण के लिए हनुमान को दक्षिण दिशा की ओर भेजा। वही नल और नील को सेतु निर्माण में नियुक्त किया। राम में संगठन शक्ति इतनी थी कि उनकी सेना सामान्य वनवासियों को संगठित करके बनाई गई थी; पर रावण जैसे योद्धा को पराजित किया।

मित्रता निभाना :

श्रीराम प्रिय भाषी तथा पूर्व भाषी व्यक्ति थे। इसी गुण से सब उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे। वे सब जातियों से प्यार करते थे और समान दृष्टि से देखते थे। मित्रता निभाने में उनमें अहंकार नहीं था। अगर किसी से मित्रता करने पर परिस्थिति जितना भी कठिन हो, मित्रता को निभाते थे। जैसे वाली का संहार करके अपने वचन के अनुसार सुग्रीव को राज्य दिलाया। रावण के संहार के बाद हृदयपूर्वक अभिनंदन करते हुए विभीषण को लंका सौंपा। जाति पांती से परे थे राम का स्नेह। वे गंगा पार करते समय केवट राजा निषाद का तथा प्यार से फल खिलाएँ शबरी का उद्धार किया। वे सब वनवासियों को साथ लेकर चले।

रावण से युद्ध करने के लिए वे किसी सबल राजा की सहायता नहीं लिये; वनवासियों को संगठित करके रावण को पराजित किया।

प्रकृति और प्राणियों के प्रति प्रेम :

श्रीराम और सीता माता वनवास के दौरान प्रकृति और प्राणियों को इतना प्यार करते थे कि उनको ऐसा लगता था कि वे ही उनके परिवार के सदस्य है और वन ही उनका घर है। नदियाँ, पहाड़, पेड और पक्षी अपनी-अपनी तरीके से उनको सहायता पहुँचाई। श्रीराम को सबसे पहले जटायु ने ही सीता के अपहरण के बारे में सूचना दी। जटायु मरने के बाद श्रीराम उसका अंत्य संस्कार श्रद्धा पूर्वक किया। इतना ही नहीं सेतु बंधु के निर्माण के समय में गिलहरियों ने भी अपनी छोटी सी सहायता की। इन पर श्रीराम ने अपना प्यार दिखाया। 14 साल बाद जब श्रीराम अयोध्या लौटे तो उन्होंने प्रकृति की रमणीयता को आद्यता दी।

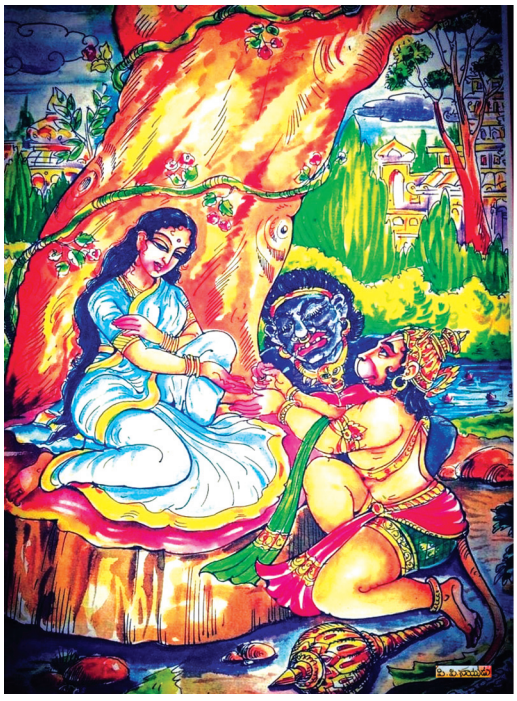

श्रीराम और हनुमान जी का संबंध :

श्रीराम और हनुमान जी का संबंध लौकिक संबंधों से परे है। इन दोनों का संबंध पवित्र, आदर्श और निष्कपट है। हनुमान जी स्वयं शंकर के अवतार है; सर्व शक्तिमान है;

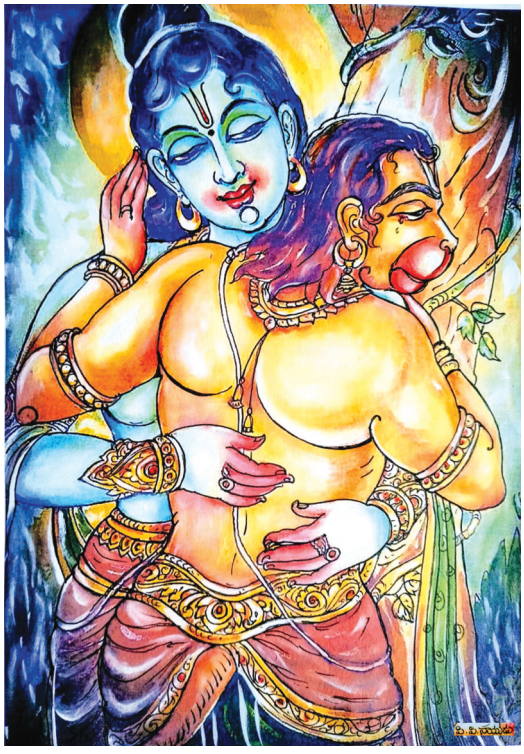

परन्तु अपने को श्रीराम के सेवक मानते हैं। ''मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रिंय बुद्धिमतां वरिष्ठम्'' ''वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।'' हनुमान मन की गति के समान तेज, वायु समान वेग, इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वायु पुत्र, वानर सेना मुखिया होने पर भी वे अपने आप को श्रीराम के दूत मानते हैं। चित्रपठों में भी श्रीराम के परिवार के साथ उनके चरणों के सामने प्रणाम करते हुए हनुमान को देख सकते हैं।

हनुमान जी सदा श्रीरामचंद्र का स्मरण करते थे। श्रीराम और सीता को अपने हृदय में बसाते हैं, जो श्रीराम के प्रति अटूट भक्ति का प्रतीक है। परंतु श्रीराम भी हनुमान जी को सेवक नहीं मानते, बल्कि अपने भाई से भी श्रेष्ठ मानते थे। श्रीराम और हनुमान एक दूसरे के बिना पूर्ण नहीं होते थे। इससे जहाँ श्रीराम के मंदिर है, वहाँ हनुमान का भी मंदिर होता है। श्रीराम के भजन में अवश्य हनुमान का भी भजन किया जाता है। आज भी राम कथा सुनाते समय सबसे पहले हनुमान जी की जय बोली जाती है। दोनों के बीच परमात्मा और परम भक्त का संबंध है।

श्रीराम नाम महिमा :

कलियुग में मोक्ष प्राप्ति के लिए न ध्यान की आवश्यकता है न ही यज्ञ की। सबसे सरल और कल्याणकारी मार्ग है नामस्मरण। कलियुग में केवल राम नाम ही जीवन का आधार है। 'राम' यह शब्द जितना सुंदर है, उतना ही मधुर है इसका उच्चारण। गुरु वशिष्ठ के अनुसार, राम शब्द अग्नि बीज और अमृत बीज से बना है। इस नाम जपने से मन, शरीर और आत्मा में शक्ति का संचार होता है। स्वयं हनुमान जी हमेशा राम नाम का जप करते-करते चिरंजीवी बने। हनुमान चालीसा में यही कहा गया है कि राम नाम जप करने से जीवन के समस्त कष्टों से राह मिलती है और सामान्य व्यक्ति भी असामान्य हो जाता है। रामचरितमानस बालकाण्ड में है-

''जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।।''

अर्थात आदिकवि वाल्मीकि जी उल्टा रामनाम ('मरा','मरा') जपकर धन्य हो गए। उसके बाद उन्होंने रामायण जैसी महान कृति की रचना की। रावण से युद्ध करने से पहले रामसेतु के निर्माण के

समय वानर राम नाम लिखे पत्थरों को समुद्र में फेंकते थे, तो वे पत्थर पानी में तैरते थे। यह सब देखकर स्वयं श्रीराम ने एक पत्थर को पानी में डाला, तो वह डूब गया। आश्चर्य में डूबे श्रीराम से नील कहते हैं कि स्वयं राम से अधिक राम नाम महान है। इतना ही नहीं जब कभी श्रीराम के विरोध में हनुमान जी को खड़ा होना पड़ता है तो वे राम नाम को जपते हुए उसी को अपना रक्षा कवच बना देते हैं, जिससे स्वयं श्रीराम को हनुमान जी के सामने हार मानना पड़ता था। सभी देवी देवता राम नाम स्मरण के लिए तरसते हैं। शिव भगवान भी कहते है वे स्वयं निरंतर राम नाम का जप करते हैं। माता पार्वती के पूछने पर भगवान शिव ने स्वयं राम नाम की महिमा को बताया कि -

''श्रीराम राम रामेति, रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनामतत्तुल्यं, राम नाम वरानने।''

इसका भावार्थ है- 'राम, राम, राम का जप करने से श्री विष्णुसहस्रनाम को जप करने का समान है।'

अयोध्या मंदिर :

रामायण कालीन, सात पवित्र नगरियों में एक, सरयू नदी के तीर में स्थित अयोध्या में, राम मंदिर का निर्माण हुआ है, जो आजकल उत्तर प्रदेश में है। उसी जगह पर यह मंदिर है जहाँ श्रीरामचंद्र का जन्म हुआ था। यह श्रीराम मंदिर लोगों से 'अध्योध्या मंदिर' कहा जाता है। यह भव्य मंदिर हमारे देश के संस्कृति और धार्मिक विरासत का प्रतीक है। श्रीराम के दर्शन मात्र से लोग अपने आप को धन्य समझते हैं; शांति को महसूस करते हैं। यहाँ भगवान श्रीराम के दर्शन के लिए हर दिन लाखों श्रद्धालु आते हैं। इस पवित्र मंदिर की अद्भुत नक्काशी को देखते-देखते अपने आप को भूल जाते हैं। इस मंदिर का निर्माण नागर शैली में हुआ है। गर्भगृह में हम सब की रक्षा के लिए अत्यंत सुंदर बालराम विराजमान है। हमारी पीढ़ी ही धन्य है, क्योंकि जीवित रहते हम राम मंदिर का निर्माण तथा बालराम की प्रतिष्ठा को देखने का

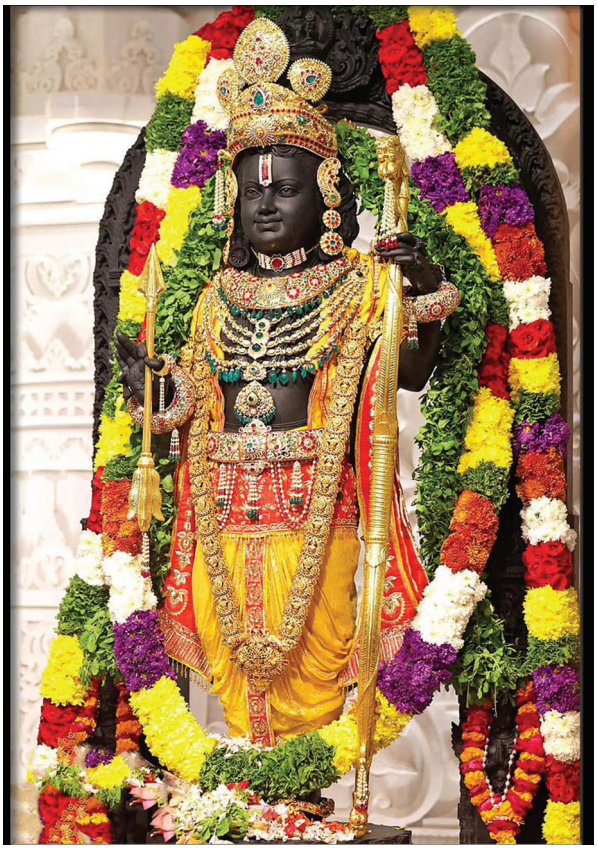

सौभाग्य मिला है। श्रद्धा भक्ति से प्रार्थना करने पर भगवान श्रीराम हम सबको सदा रक्षा करेगा।

अयोध्या में श्रीराम नवमी उत्सव :

श्रीराम नवमी पर अयोध्या मंदिर में लाखों भक्त बालराम के दर्शन के लिए इकट्ठा होते हैं। इस दिन भगवान राम के जन्मोत्सव उत्साह से मनाया जाता है। मंदिर को विशेष रूप से अलंकार किया जाता है और दोपहर 12 बजे राम के माथे पर सीधे सूर्य की किरणें पड़ती हैं जो सूर्य तिलक कहाँ जाता है। पवित्र आरती के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इस दिन श्रद्धा भक्ति से प्रार्थना करने पर भगवान श्रीराम सबको हमेशा रक्षा करेगा। भगवान राम के जन्म के हजारों साल बाद भी वो हमें प्रेरणा देते है। श्रीराम का जीवनमार्ग हमारे लिए दिशा-निर्देश है और हर युग के लिए अनुकरणीय है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

94. तिरुत्तोलै विल्लिमंगलम् (दो आल्वार नव तिरुप्पति 4, 5)

आल्वार तिरुनगरी से (क्षेत्र 98) ताम्रपर्णी नदी पार कर जा सकते हैं। (लगभग 4 कि.मी.) तिरुक्कुळन्दै से मंगलकुरिची होकर नाले किनारे जाकर यहाँ पहुँच सकते हैं। (लगभग 5 कि.मी.) (दोनों मंदिर एक दिव्य क्षेत्र माना जाता है।)

पहला मंदिर - ताम्रपर्णि नदी किनारे है।

मूलमूर्ति - श्रीनिवास (देवर पिरान) पूर्वाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - उभय देवी।

दूसरा मंदिर - (प्रथम मंदिर के पास)।

मूलमूर्ति - अरविन्द लोचनन्, चेंतामरैकण्णन् - पूर्वाभिमुखी। आसीनस्थ।

तायार (माताजी) - करुन्तडङ्कण्णि देवी।

तीर्थ - वरुण तीर्थ, ताम्रपर्णी नदी।

विमान - कुमुद विमान।

प्रत्यक्ष - इन्द्र, वायु, वरुण।

विशेष - यह दोनों मंदिर एकांत स्थान में है। अत्तिरेय सुप्रभर ऋषि में यहाँ यागशाला की स्थापना कर ऋत्विकों के साथ याग शाला का परीक्षण किया। उस वक्त वहाँ उनको एक तराजू एक धनुष दिखाई पडा। जब बडे आश्चर्य के साथ उनको अपने हाथ में लिया तब तराज् एक कन्या के रूप में और धनुष एक पुरुष रूप में कुबेर शाप से मुक्त होकर प्रकट हुए।

तुला - तराजू - विल धनुषः दोनों को शाप मुक्ति, होने का स्थान - तोलै विल्लिमंगलम् दो मंदिर होने से इरट्टै (दो) तिरुपति नाम से प्रचलित है। यहाँ से निकट

शौरमंगलम् नामक गाँव में नम्माल्वार का अवतार स्थल है (अप्पन सन्निधि)।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

95. तिरुक्कुळन्दै - (पेरुङ्कुळम्) (आल्वार नवतिरुपति) - 6

श्रीवैकुंठ दिव्य क्षेत्र सेवल रेल, बस मार्ग में 11 कि.मी. पर हैं। तिरुप्पुलिंगुडी (दिव्यक्षेत्र सं.93) से उसी मार्ग में 7 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - श्रीनिवासन, पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

उत्सव मूर्ति - मायकूत्तन - बाजू में गरुड़ भगवान है।

तायार (माताजी) - अलमेलुमंगैत्तायार, कुळन्दैवल्लि नाम से दो उभय नाच्चियार।

तीर्थ - पेरुङ्कुलम्।

विमान - आनन्द निलय विमान।

प्रत्यक्ष - बृहस्पति।

विशेष - इस क्षेत्र में अच्मसारन नामक (देवताओं की प्रार्थना के अनुसार) एक असुर को पालिवन ने आयर युद्ध कर उस को नीचे गिराकर, उसके ऊपर चढकर नाचते हुए उसको मारा। इसलिए भगवान का नाम मायक्कूत्तन।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 1 दिव्य पद।

96. तिरुक्कोळूर - (आल्वार नव तिरुपति.7)

आल्वार तिरुनगरी (दिव्य क्षेत्र - सं.98) तेन तिरुपेरै मार्ग में - लगभग 2 कि.मी. पर यहाँ दिव्य क्षेत्र स्थित है।

मूलवर - वैत्तमानिधि पेरुमाल, निक्षेप वित्तन, पूर्वाभिमुखी- भुजंग शयन।

तायार (माताजी) - कुमुदवल्लि, कोळरवल्लि - दोनों अलग सन्निधि में दर्शन देती हैं।

तीर्थ - कुबेर तीर्थ, तामिरपरणियारु।

विमान - श्रीकर विमान।

प्रत्यक्ष - मधुरकवि आल्वार पार्वती के शाप से कुबेर से नवनिधि (हीन) हो गई। यह ऐतीह्य है कि दिव्य क्षेत्र में भगवान को प्राप्त करने नवनिधियों ने तपस्या की। भगवान प्रत्यक्ष हुए। नवनिधियों की प्रार्थना के अनुसार, 'निक्षेपवित्तन' (वैत्तमानिधि) नाम से निधियों की रक्षा करते हैं। यहाँ अधर्म से युद्ध कर धर्म की जीत हुई। इस स्थल का दूसरा नाम। 'अधर्मभिगनम' है। यह मधुरकवि आल्वार का जन्म स्थल है।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 12 दिव्य पद।

97. तिरुप्पैरै - (तेन तिरुप्पेरै) (आल्वार नव तिरुपति - 8)

यह दिव्य क्षेत्र आल्वार तिरुनगरी (दिव्य क्षेत्र 98) से 6 कि.मी. पर है - बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - मकर नेडुङ्कुळैकादन, निकरिलामुहिलवण्णन- पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - कुडैक्कादुवल्लि नाच्चियार, तिरुप्पैरै नाच्चियार, - दोनों अलग सन्निधियों में दर्शन देती हैं।

तीर्थ - शुक्र पुष्करिणी, शंख तीर्थ।

विमान - भद्र विमान।

प्रत्यक्ष - शुक्र, ईशान्यरुद्र, ब्रह्म।

विशेष - लक्ष्मी की प्रार्थना के अनुसार दुर्वास महाऋषि ने भूदेवी को लक्ष्मी सदृश हो जाने का शाप किया। भूदेवी नें दुर्वास महाऋषि से अष्टाक्षर से मुक्ति प्राप्त किया।

अष्टाक्षर मंत्र का उपदेश प्राप्त कर तपस्या में लीन श्री भूदेवी ने 'श्री पैरै' (लक्ष्मी का शरीर) के नाम से (पंगुनी पूर्णिमा के दिन) ताम्रपर्णी तीर्थ में अर्घ्य देने के प्रयत्न करते वक्त - मछली (मकर) आकार के - बहुत दो कुंडल हाथमिले। उन्हें भगवान को समर्पित किया। इसलिए नाम धारण किया - इसलिए इस क्षेत्र का नाम 'तिरुप्पैरै' पडा। स्थल पुराण के अनुसार जब विदर्भ देश में अनावृष्टि हुई वहाँ के राजा ने इस क्षेत्र में भगवान की आराधना की। उनके देश में पर्याप्त वर्षा हुई और देश में संपन्न हुआ।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

क्रमशः

सात सौ वर्षों की कृपा : श्री राघवेंद्र स्वामी की जीवंत उपस्थिति

- श्रीमती मैथिली राव

पूज्याय राघवेन्द्राय सत्यधर्मरताय च।
भजतां कल्पवृक्षाय नमतां कामधेनवे।।

श्री राघवेंद्र स्वामी मध्व दर्शन के महान भक्तों एवं विद्वानों में से एक थे। लगभग 50 सालों तक, वे एक महान पीठ के प्रमुख रहे। उन्होंने तर्क, मीमांसा, संगीत, योग, धर्मशास्त्र और सभी 64 कलाओं जैसे कई क्षेत्रों में विद्वत्ता प्राप्त की थी। उनके भतीजे, नारायणाचार्य ने 'राघवेंद्र विजय लिखी', जिसमें इस महान संत के जीवन का पूरा विवरण दिया गया है।

पूर्वाश्रम :

श्री राघवेंद्र स्वामी का जन्म 1595 में तमिलनाडु के कावेरीपट्टनम में थिम्मन्ना भट्ट और गोपिकाम्बा के घर में हुआ था। उनके पूर्वज गौतम गोत्र के थे। भगवान वेंकटेश्वर की कृपा से हुए जन्म के कारण उनका नाम वेंकटनाथ रखा गया। उनके पिता अक्षराभ्यास संस्कार के समय उन्होंने अपने पिता से पूछा, ''ओम जैसा छोटा अक्षर महान ईश्वर को कैसे समझा सकता है?'' अपने पुत्र की इस सूक्ष्म दृष्टि को देखकर पिता बहुत खुश हुए। 8 वर्ष की उम्र में वेंकटनाथ का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। यद्यपि तब तक उनके पिता का निधन हो गया था। श्री नारायण को अपना पिता और गायत्री देवी को अपनी माँ मानने वाले वेंकटनाथ ने खुद को कभी भी अनाथ नहीं माना।

शिक्षा :

पिता के मरणोपरांत, वेंकटनाथ की परवरिश और शिक्षा मदुरै में उनके बड़े भाई, गुरुराजा और बाद में उनके बहनोई, लक्ष्मीनरसिम्हाचार्य की देखरेख में हुई। मदुरै में उन्होंने यजुर्वेद, मणिमंजरी और अनुमध्वविजय का अध्ययन किया। उनकी ध्यान की शक्तियाँ तब दिखाई दीं जब संध्यावंदन करते समय उनका पानी एक सूखे बीज पर गिरा, जिससे वह अंकुरित हो गया। उन्होंने वीणा बजाने में भी महारत हासिल की, इसलिए वे वीणा वेंकट भट्ट के नाम से जाने लगे। यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि वेंकटनाथ एक ऐसे परिवार से थे जो संगीत में कुशल था। उनके परदादा, कृष्णभट्ट ने विजयनगर साम्राज्य के राजा कृष्णदेवराय को वीणा सिखाई थी, और उनके पिता भी संगीत में कुशल थे।

अपने गुरु श्री सुधींद्र तीर्थ के अधीन अध्ययन :

अपने अध्ययन को आगे बढाने के लिए वेंकटनाथ उस समय के विद्या केंद्र कुंभकोणम गए। वहाँ, उन्होंने श्री सुधींद्र तीर्थ के अधीन अध्ययन किया। वे आधी रात के बाद तक जागकर पढ़ाए गए पाठों पर अपनी टिप्पणियाँ और नोट्स लिखते थे। एक बार, उन्होंने राजमन्नार मंदिर में एक बहस में हिस्सा लिया और एक मायावादी को हरा दिया। गुरु श्री सुधींद्र तीर्थ उनके व्याकरण के ज्ञान, गहरे ज्ञान और दुर्लभ बहस करने के कौशल से हैरान थे, और उन्हें ''महाभाष्य वेंकटनाथाचार्य'' की उपाधि प्रदान की। इसी तरह उन्होंने कई स्मृतियों के आधार पर तप्तमुद्रा धारण के महत्व को समझाया, जिससे विरोधियों को उनके तर्कों को मानना पड़ा कि वे अकाट्य थे। जीवन में कितनी ही चुनौतियों के आने पर भी उन्होंने अपनी शिक्षा और सीखने को नहीं छोड़ा; उनका विश्वास था कि जो कुछ

भी बिना मांगे और बिना पूछे मिलता था, उसी से जीवन जीते हुए अपने दृढ़ संकल्प पर अडिग रहना चाहिए।

वैवाहिक जीवन :

मदुरै से लौटने पर, उनका विवाह सरस्वती से हुआ, जो एक कुलीन परिवार से थीं। शास्त्र कहते हैं कि जिसने अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर लिया है, उसके लिए विवाहित जीवन सीखने में बाधा नहीं डालता। वेंकटनाथ के लिए, उनकी अधिकांश शिक्षा सरस्वती से विवाह के बाद, देवी सरस्वती के आशीर्वाद से हुई। उन्हें पुत्र का वरदान प्राप्त हुआ जिसका नाम रखा लक्ष्मीनारायण। उनका पारिवारिक जीवन घोर गरीबी में बीता, लेकिन मध्व दर्शन के मीठे अमृत में डूबे हुए वेंकटनाथ इससे अप्रभावित थे।

संन्यास (1621) :

सन् 1621 को उनके गुरु ने उनसे संन्यास लेने के लिए कहा। इसने उन्हें एक गंभीर दुविधा में डाल दिया। एक बात तो यह थी कि वे जानते थे कि अगर वे संन्यास लेंगे, तो आखिरकार उन्हें मठ का नियंत्रण संभालना होगा। कहते हैं कि इस समस्या का समाधान ढूंढते समय, विद्या लक्ष्मी स्वयं उनके सामने प्रकट हुईं। जिन्होंने श्री माधवाचार्य के दर्शन का प्रचार-प्रसार हेतु इस दायित्व को स्वीकार करने की प्रेरणा दी। अपने वास्तविक कर्तव्य का आभास होने के पश्चात वेंकटनाथ ने विद्या लक्ष्मी की बात मानी और संन्यास ले लिया। श्री सुधींद्र ने 1621 वर्ष के अनुरूप दुर्मति वर्ष में फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष के दूसरे दिन वेंकटनाथ को दीक्षा दी। उन्हें ''राघवेन्द्र तीर्थ'' का पवित्र नाम दिया गया।

मठाधिपति एवं यात्रायें :

1624 में, राघवेंद्र तीर्थ कुंभकोणम मठ के प्रमुख बने, जिसे पहले विजयेन्द्र मठ या दक्षिणादि मठ के नाम से जाना जाता था, और अब इसे मंत्रालय श्री राघवेंद्र स्वामी मठ के नाम से जाना जाता है। उत्तरादि मठ, व्यासराज मठ और राघवेंद्र मठ को द्वैत वेदांत के तीन प्रमुख धार्मिक संस्थान माना जाता है और इन्हें सामूहिक रूप से 'मठत्रय' कहा जाता है।

कुंभकोणम में कुछ समय रुकने के बाद, वे रामेश्वरम, श्रीरंगम और मथुरा की तीर्थयात्रा पर गए। बाद में, वे पश्चिम की ओर उडुपी और सुब्रमण्यम गए, और फिर पंढरपुर, कोल्हापुर और बीजापुर गए। कहा जाता है कि वे कोल्हापुर में लंबे समय तक रहे और बीजापुर में, उन्होंने कथित तौर पर कई अद्वैतियों को हराया और उन्हें द्वैत मत में परिवर्तित किया और उसके बाद, वे कुंभकोणम लौट आए। 1663 तक वे मैसूर चले गए जहाँ उन्हें डोड्ड देवराय ओडेयार से एक अनुदान मिला। आखिरकार, उन्होंने मंत्रालयम में बसने का निर्णय लिया।

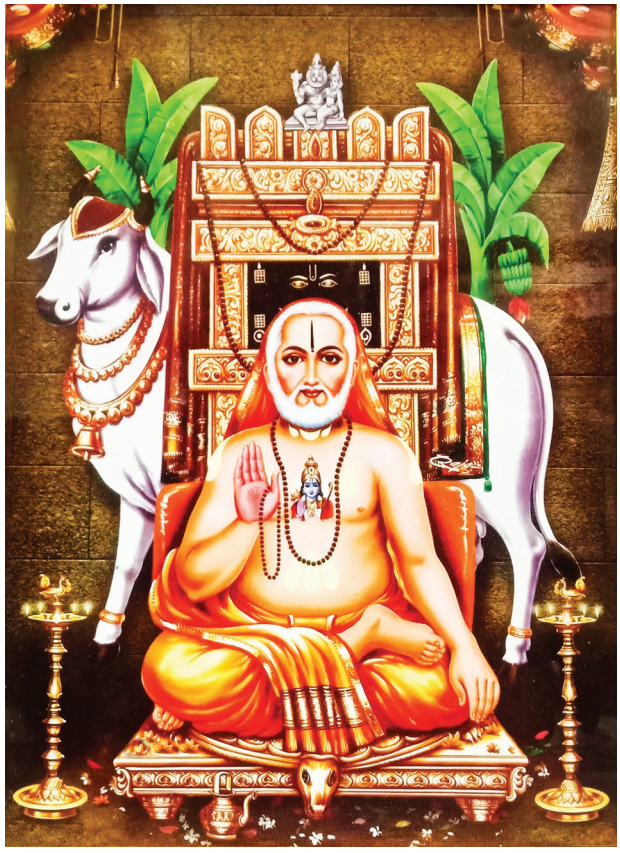

लेखन :

राघवेंद्र तीर्थ के नाम पर संस्कृत में लिखी गई लगभग 45 रचनाएँ हैं। विद्वानों के अनुसार उनकी संक्षिप्तता, सरलता और द्वैत के गूढ़ आध्यात्मिक विचारों को सरल शब्दों में समझाने की क्षमता उनकी रचनाओं की विशेषता है।

श्री राघवेंद्र स्वामी ने प्रमाण पद्धति, वाडावली, प्रमाण लक्षण और कई अन्य कार्यों पर विमर्श लिखे, जिनमें से कई को 'भावदीप' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने ईशावास्य, षट्प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक और छान्दोग्य उपनिषदों पर टीकाएँ लिखीं। सभी उपनिषदों पर टीका लिखने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उपनिषद के केवल मंत्र भाग पर एक टीका लिखी-ऐतरेय मंत्रार्थ संग्रह। 'तत्व मंजरी' के शीर्षक के साथ उन्होंने अनुभाष्य पर एक सरल टीका लिखी। उन्होंने श्री जयतीर्थ की सभी टीकाओं के लिए टिप्पणियाँ लिखने का संकल्प लिया। जब उन्होंने श्री जयतीर्थ की 18 टिकाओं में से 17 के लिए टिप्पणियाँ पूरी कर लीं, तो उनके बेटे लक्ष्मीनारायणाचार्य ने उन्हें ऋग्वेद भाष्य पर अपना काम दिखाया, जो श्री राघवेन्द्र स्वामी की शिक्षा पद्धति के अनुसार लिखा गया था।

इस महान संत को लगा कि उनके शिष्य की शिक्षा दुनिया को दिखाई जानी चाहिए, इसलिए टिप्पणी लिखने के बजाय, उन्होंने ऋगार्थ मंजरी, एक विवरणिका लिखी, जो पहले 40 सूक्तों का अर्थ बताती है। उन्होंने 'मंत्रोद्धार' लिखा, जो तंत्रसार के अनुसार सभी मंत्रों का विवरण देता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद भाष्य लिखे एवं पुरुष-सूक्त, अम्ब्राणी-सूक्त, बालित्था-सूक्त एवं हिरण्यगर्भ-सूक्त पर लघु भाष्यों से ज्ञान-पिपासुओं हेतु महत्कार्य किया।

भक्ति भावना :

श्री राघवेंद्र स्वामी भगवान विष्णु के सच्चे भक्त थे (विशेषतः राम, कृष्ण और नरसिंह के रूपों में) द्वैत दर्शन और वैष्णव धर्म के समर्थक के रूप में वे मूल राम को अपना मुख्य देवता मानते थे। ऐसा भी माना जाता है कि उन्हें हनुमान के पंचमुखी रूप के दर्शन हुए थे। यहाँ तक कि यह भी माना जाता है कि भगवान नरसिंह के भक्त प्रह्लाद का पुनर्जन्म राघवेन्द्र स्वामी के रूप में हुआ है।

श्री राघवेंद्र तीर्थ और सर थॉमस मुनरो की कहानी :

राघवेंद्र तीर्थ और सर थॉमस मुनरो के बारे में एक कहानी ब्रिटिश भारत के एक भारतीय सिविल सेवक डब्ल्यू. फ्रांसिस ने 1916 में, घटना घटने के 100 से ज्यादा साल बाद रिकॉर्ड की थी। कहानी इस प्रकार है: 1800 में सर थॉमस मुनरो को बेल्लारी ज़िले का प्रिंसिपल कलेक्टर नियुक्त किए जाने के बाद, वे मंत्रालय में टैक्स इकट्ठा करने गए। कहा जाता है कि राघवेंद्र तीर्थ समाधि से प्रकट हुए और थॉमस मुनरो से बात की, जबकि संत दूसरों को दिखाई नहीं दे रहे थे और उनकी आवाज़ भी सुनाई नहीं दे रही थे। मुनरो को यकीन हो गया और वे वापस चले गए और मंत्रालय मठ के दान को बनाए रखने का निर्देश दिया। परंतु इस घटना के दस्तावेज़ मौजूद नहीं हैं।

लोकप्रिय संस्कृति में श्री राघवेंद्र स्वामी :

यह कहा जा सकता है कि अपनी आध्यात्मिक शक्ति और उनसे जुड़े अनगिनत चमत्कारों के कारण श्री राघवेंद्र स्वामी कर्नाटक ही नहीं भारतीय जन-मानस में एक बहुत लोकप्रिय संत के रूप में ख्यात हैं। इतना ही नहीं, हरिदास परंपरा के अन्य संतों के विपरीत, उनके अपने अनुयायियों का एक स्वतंत्र और सर्वव्यापी

पंथ है, जो न सिर्फ़ जीवन के सभी क्षेत्रों से, बल्कि सभी जातियों, संप्रदायों और यहाँ तक कि धर्मों से भी आते हैं। मानवीयता के भाव से प्रेरित उनकी भक्ति के सम्मान में उनके शिष्यों एवं अन्यों ने अनेक रचनाएँ समर्पित की हैं।

गुरु के रूप में मान्यता प्राप्त श्री राघवेंद्र स्वामीजी के प्रति भक्ति भाव दिखाने के लिए भक्त हर गुरुवार को उनके मंदिर में दर्शन हेतु जाते हैं।

जीव समाधि :

श्री राघवेंद्र स्वामी के जीवन की सबसे गहरी और रहस्यमय घटनाओं में से एक उनकी जीव समाधि थी- जीवित रहते हुए भी शाश्वत ध्यान की स्थिति में प्रवेश करने का एक सचेत निर्णय। वर्ष 1671 में, राघवेंद्र स्वामी ने अपने अनुयायियों से घोषणा की कि उनके लिए अपना भौतिक शरीर छोड़ने का समय आ गया है, मृत्यु के माध्यम से नहीं, बल्कि जीव समाधि के माध्यम से, जहाँ आत्मा भौतिक विश्व में शाश्वत रूप से सचेत, ध्यानमग्न और आध्यात्मिक रूप से सक्रिय रहती है।

1671 में श्रावण कृष्ण पक्ष के दूसरे दिन, श्री राघवेंद्र स्वामी ने, इस कार्यक्रम को देखने के लिए इकट्ठा हुए, सौकड़ों भक्तों को अपना अंतिम भाषण दिया। इस भाषण के बाद, श्री राघवेंद्र उस वृंदावन में प्रवेश कर गए जो उनके लिए खास तौर पर मंचले के पास माडवारा गाँव से लाए गए पत्थरों से बनाया गया था। उनके अनुसार, ये पत्थर भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के चरणों से पवित्र हुए थे, जब वे त्रेतायुग के दौरान इस गाँव को आए थे।

उन्होंने अपने शिष्यों को सलाह दी थी कि जब उनके हाथ में उंगलियों से घूम रही जपमाला स्थिर हो जाए, तो उनके चारों ओर पत्थर की पट्टियाँ लगाना शुरू कर दें। उन्होंने प्रणव मंत्र का जाप करना शुरू किया और गहरी समाधि में चले गए। जब उनकी जपमाला स्थिर हो गई, तो उनके शिष्यों ने उनके सिर तक पट्टियाँ लगा दीं और फिर, उनके पहले के निर्देशों के अनुसार, उन्होंने एक तांबे का डिब्बा रखा जिसमें 1200 लक्ष्मी नारायण शालिग्राम थे, जिन्हें खास तौर पर नेपाल की गंडकी नदी से लाया गया था। फिर उन्होंने उसके ऊपर ढकने वाली पट्टी रखी और उसे मिट्टी से भर दिया। उन्होंने बनाए गए वृंदावन पर बारह हज़ार वराह (अभिषेक) डाले।

उनके भाषण के दौरान की उनकी कुछ उक्तियां इस प्रकार हैं :

''सही जीवन के बिना, सही सोच कभी नहीं आएगी। सही जीवन का मतलब है, जीवन में अपनी स्थिति के अनुसार अपने तय कर्तव्यों को बिना फल की इच्छा किए पूरा करना और दूसरी ओर अपने सभी कामों को भगवान को समर्पित करना। यही

असली सदाचार (सही जीवन) है। यही असली कर्म योग है।''

''योग्य लोगों की भलाई के लिए किया गया समाज सेवा भी भगवान की पूजा ही मानी जानी चाहिए। संक्षेप में, हमारा जीवन ही पूजा है। हर काम एक पूजा है। यह जीवन कीमती है। हमारे जीवन का हर पल कीमती है। बीता हुआ एक पल भी वापस नहीं आएगा। शास्त्रों को सुनना और हमेशा उन्हें याद रखना ही सबसे बड़ा कर्तव्य है।''

''भगवान के प्रति भक्ति रखो। यह भक्ति कभी भी अंधविश्वास नहीं होनी चाहिए। भगवान की श्रेष्ठता को पूरे दिल से स्वीकार करना ही सच्ची भक्ति है। अंधविश्वास भक्ति नहीं है। यह सिर्फ़ मूर्खता है। हमें न सिर्फ़ भगवान के प्रति, बल्कि सभी अन्य देवी-देवताओं और गुरुओं के प्रति भी उनके दर्जे के अनुसार भक्ति रखनी चाहिए।''

उन्होंने अपने भक्तों को आश्वासन दिया था कि 700 वर्षों तक वो जीव समाधि में रहेंगे, भक्तों को आशीर्वाद देते रहेंगे और उनका मार्गदर्शन करते रहेंगे। यह चमत्कारी कार्य उनकी दिव्य शक्तियों और शाश्वत उपस्थिति का एक जीवित प्रमाण है। यह भविष्यवाणी भारत के आध्यात्मिक इतिहास में अद्वितीय है। उन संतों के विपरीत जिन्हें केवल उनकी शिक्षाओं के माध्यम से याद किया जाता है, श्री राघवेंद्र स्वामी की सक्रिय आध्यात्मिक उपस्थिति सदियों बाद भी महसूस की जाती है। जो भक्त मंत्रालयम जाते हैं, वे अक्सर गहरी शांति, दिव्य दर्शन, चमत्कारी हस्तक्षेप और अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलने की बात कहते हैं - बिना किसी सीधे संवाद के भी। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि संत अभी भी वृंदावन के भीतर से उत्तर देते हैं, विश्वास की सच्ची पुकारों पर ध्यान देते हैं।

आज भी वो हम सभी को अपने आशीर्वाद एवं स्नेह से अनुग्रहीत करते रहते हैं। जो भी सच्ची भक्ति के साथ उनकी सेवा-आराधना करता है उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इसलिए उन्हें ''कलियुग कामधेनु'' (इच्छा पूरी करने वाली गाय) और ''कल्पवृक्ष'' (इच्छा पूरी करने वाला पेड़) माना जाता है।

ऐसी दुनिया में जहाँ बड़े-बड़े साम्राज्य और महान राजा भी समय के साथ भुला दिए जाते हैं, श्री राघवेंद्र स्वामी की स्थायी विरासत अपने आप में एक कालातीत चमत्कार है। उन्हें जीव समाधि लिए हुए 350 से ज्यादा साल हो गए हैं, फिर भी लाखों लोग रोज उनका नाम लेते हैं, उनकी तस्वीर हज़ारों घरों में लगी है, और जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग आज भी उनका आशीर्वाद चाहते हैं।

भक्ति, करुणा, विनम्रता और धर्म के मार्ग पर उनकी शिक्षाएँ इतिहास की बातें नहीं हैं - वे आज भी आधुनिक बुद्धित्यों को प्रेरित करती हैं और आध्यात्मिक साधकों का मार्गदर्शन करती हैं। उनके नाम पर गाए जाने वाले भजन, उनके भक्तों द्वारा जपे जाने वाले मंत्र और उनके चमत्कारों की कहानियाँ पीढ़ियों से चली आ रही हैं, जो माता-पिता से बच्चों तक पवित्र खजाने की तरह सौंपी जाती हैं।

उन्हें याद नहीं किया जाता - उन्हें महसूस किया जाता है। उनके भक्तों के लिए, वह इतिहास के संत नहीं हैं, बल्कि एक जीवित गुरु हैं, जो परे से मार्गदर्शन करते हैं, रक्षा करते हैं और आशीर्वाद देते हैं। उनकी उपस्थिति केवल पत्थर या शास्त्रों में ही नहीं, बल्कि हर भक्त के दिल की धड़कन में महसूस होती है। सच में, राघवेंद्र स्वामी की विरासत फीकी नहीं पड़ रही है - यह शाश्वत है।

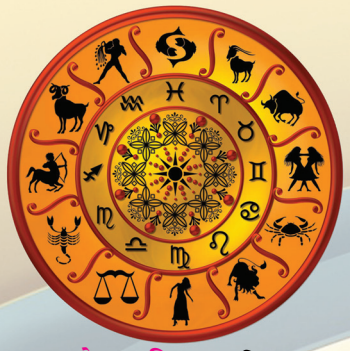

मार्च महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - भूमि-गृह, वाहनादि सौख्य प्राप्ति, मान-सम्मान प्रतिष्ठाओं में वृद्धि, स्वस्थ शरीर, मन प्रसन्न रहेगा। आरोग्य सुख, आप अपने धैर्य-पराक्रम के द्वारा कार्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता जिससे मनोबल की वृद्धि, पारिवारिक सौहार्द्र वातावरण, ग्रहों का परिवर्तन शुभ प्रभावी रहेगा।

वृषभ राशि - यह माह आपके लिए मध्यम फल देगा। रचनात्मक कार्यों में प्रवृत्ति बढ़ेगी, आरोग्य सुख, आपके मन में पराक्रम धैर्य, विवेकशीलता की वृद्धि होगी, एकाधिक स्त्रोतों से आय प्राप्त होंगे, निर्माण कार्यों में सफलता, संवाद से हर्ष, संतान पक्ष की चिन्ता, रोजी-रोजगार में लाभ, उत्तरार्ध में अनुकूलता बनी रहेगी।

मिथुन राशि - मासफल सामान्य रहेगा, अपने दिनचर्या को व्यवस्थित बनाकर रखे जिससे शरीर स्वस्थ रहेगा। आर्थिक संतुलन, श्रमानुकूल सफलता, अपने सहयोगियों का साथ मिलेगा। छात्रों के लिए सफलता का समय रहेगा। कौटुम्बिक उत्तरदायित्वों का ठीक तरह से निर्वहन न होने के कारण मानसिक तनाव, आमदनी से अधिक व्यय होगा।

कर्कटक राशि - मासफल मध्यम रहेगा। मासान्त में लघुकल्याणी ढैया से मुक्ति मिलेगी। शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यों में अभिरुचि बढ़ेगी। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा, निर्माण कार्यों में प्रगति, आर्थिक समुन्नति, रुके कार्यों में प्रगति, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि। श्रमपूर्ण कार्यों में विकास गति मिलेगी।

सिंह राशि - यह माह आपके लिए मिलाजुला रहेगा। लघुकल्याणी ढ़ैया एवं बारहवें मंगल के कारण अनुकूलता नहीं दिखेगी। दैनिक जीवन की नियमितता एवं व्यावहारिक कुशलता ही प्रगति का मार्ग प्रशस्त करेगा। आर्थिक संतुलन, व्यापार में प्रगति। उत्तरार्ध में सहयोग-समर्थन से कुछ काम बनेगा, शारीरिक कष्ट।

कन्या राशि - खानपान के ऊपर ध्यान रखें वरना उदर-वायु विकार से कष्ट, शक्ति संवर्धन, इष्ट मित्र कुटुम्बियों से हर्षोपलब्धि, सामान्य लाभ, शैक्षणिक अनुकूलता, संतान की चिन्ता, नौकरी में उल्लास, व्यावसायिक क्षेत्रों से लाभ बढ़ेगी। उत्तरार्ध में उच्चाधिकारी का सहयोग समर्थन, सामाजिक स्थिति मजबूत। आर्थिक समुन्नति, पत्नी की चिन्ता से मानसिक कष्ट।

तुला राशि - अपने चित्त को शान्त रखे वरना व्यावहारिक जीवन में कटुता का सामना करना पड़ सकता है इसलिए विचारों में सौमनस्यता लाए जिसके कारण समाधान हो सकता है। दैनन्दिन जीवन में व्यतिक्रम, आर्थिक संतुलन, नौकरी सुखद उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन सफलताकारी, यात्रा सुखद रहेगी।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए कष्टदायक रहेगा। पंचमेश गुरु अष्टम भाव में होने से उदर विकार, व्यापार में सफलता। उत्तरार्ध में कुछ बदलाव होगा। शैक्षणिक विकास, मांगलिक कार्यों में व्यय, अर्थागम में बाधा, कौटुम्बिक दायित्व निर्वहन में कठिनाई, सामयिक-सामाजिक संलग्नता, विद्या में प्रगति, यात्रा।

धनुष राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। अन्न-धन-वस्त्रों की प्राप्ति, चित्त प्रसन्न, आरोग्य सुख, अविवाहितों को वैवाहिक सुख, निकटस्थ स्थानों की यात्रा, साधु समागम, रोजी-राजगार में अनुकूलता, विद्या-बुद्धि का विकास। उत्तरार्ध का समय प्रभाव पूर्ण रहेगा। यात्रा सुखद रहेगी।

मकर राशि - यह माह आपके लिए उत्तम फलदायक सिद्ध होगा। आप इस मास में शनि की साढ़ेसाती से मुक्त हो जायेंगे, जिससे मान-सम्मान-यश-प्रतिष्ठा भी प्राप्त होंगे। अपनों का सहयोग, इष्टमित्रों का साथ, आकस्मिक आय, उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन मिश्रित प्रभावी रहेगा, कौटुम्बिक सुख मिलेगा।

कुंभ राशि - शारीरिक सुख, अन्न-धन-वस्त्रादि की प्राप्ति, अभीष्ट सिद्धि का योग प्राप्त होगा। ठोस आमदनी का मार्ग प्रशस्त, संतति सुख, व्यापारिक लाभोन्नति व्यक्तित्व का विकास होगा। उत्तरार्ध में सूर्य-मंगल का परिवर्तन कठिनाईयाँ उत्पन्न करेगा। विवादग्रस्तता, आमदनी से अधिक व्यय होगा।

मीन राशि - आत्मविश्वास से कार्यों को सम्पादन करें क्योंकि मासफल अच्छा है फिर भी सावधानी जरूरी, सामयिक विकास, मानसिक-उल्लास, किन्तु द्वादशस्थ सूर्य-मंगल-राहु-कष्टकारी, श्रम प्रयास से कार्यों में सीमित सफलता, उत्तरार्ध में ग्रहों का बदलाव शुभद, गुरु मार्गी होकर प्रगतिशीलता बढ़ेगा। सुन्दरकाण्ड का पाठ अथवा मंगल व्रत श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

(नीतिकथा)

कौशल की चोरी नहीं होती

- श्री के.रामनाथन

प्राचीन काल में, राम और श्याम नाम के दो घनिष्ठ मित्र थे। राम थोड़ा आदर्शवादी और भावुक था, जबकि श्याम व्यावहारिक और जीवन के गहरे दर्शन को समझने वाला था। एक बार, वे दोनों पास के एक गाँव जाने के लिए घने जंगल के रास्ते से होकर यात्रा कर रहे थे।

सूरज ढलने को था और जंगल में अजीब-सी शांति छाई हुई थी। चलते-चलते अचानक उनकी नज़र एक विशाल, पुराने बरगद के पेड़ पर पड़ी।

उन्होंने देखा कि दो ग्रामीण व्यक्ति बड़ी सावधानी से उस पेड़ पर चढ़ रहे थे। पेड़ की एक मोटी शाखा पर मधुमक्खियों का एक बड़ा-सा छत्ता लगा हुआ था, जो शहद से भरा हुआ दिखाई दे रहा था। उन लोगों ने धुएँ का उपयोग करके मधुमक्खियों को भगाया और फिर बड़े-बड़े बर्तनों में शहद निकालना शुरू कर दिया।

दोनों मित्र एक सुरक्षित दूरी पर खड़े होकर यह दृश्य देखते रहे।

राम की आँखों में गुस्सा और निराशा झलकने लगी। वह गहरी साँस लेकर बोला, ''देखो, श्याम! यह कितना अन्याय है। ये मधुमक्खियाँ कितनी मेहनती हैं। इन्होंने हज़ारों फूलों पर जाकर, न जाने कितने दिनों की अथक परिश्रम से यह शहद का एक-एक कतरा इकट्ठा किया होगा। यह छत्ता उनकी पूरी मेहनत, लगन और बचत का फल है।''

राम ने अपनी बात जारी रखी, ''और इन लालची इंसानों को देखो! ये कितनी आसानी से उन्हें भगाकर, बिना कोई मेहनत किए, उनका सारा खज़ाना चुरा रहे हैं। यह तो मेहनत की चोरी का सबसे बुरा उदाहरण है! क्या यह कर्म गलत नहीं है?''

राम की बातों में भावनात्मक टीस थी, जो चोरी होते हुए श्रम को देखकर दुखी हो रहा था।

श्याम ने शांति से अपने मित्र की बात सुनी। उसने पेड़ की ओर देखा, जहाँ अब भी कुछ मधुमक्खियाँ छत्ते के आस-पास मंडरा रही थीं, और फिर मुस्कुराते हुए राम की ओर देखा।

श्याम ने राम के कंधे पर हाथ रखा और गंभीर लेकिन शांत लहजे में कहा, ''नहीं दोस्त, तुम केवल उस वस्तु को देख रहे हो जो चुराई जा रही है, लेकिन तुम उस चीज़ को नहीं देख रहे जो कभी चुराई नहीं जा सकती।''

राम भ्रमित होकर बोला, ''मैं समझा नहीं, तुम क्या कह रहे हो?'' श्याम ने समझाया, ''देखो, यह सच है कि ये लोग मधुमक्खियों के 'इकट्ठा किए हुए' शहद को चुरा सकते हैं, वे आज उनका 'भंडार' चुरा रहे हैं। लेकिन,

मेरे मित्र, वे उन मधुमक्खियों की दो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ें कभी नहीं चुरा सकते।''

''एक उनका कौशल। मधुमक्खियों के पास यह ज्ञान और कौशल है कि वे कहाँ-कहाँ से सर्वोत्तम पराग और रस इकट्ठा करें।''

''दूसरा उनकी मेहनत और लगन। ये उनमें जन्मजात होते हैं जिससे वे अथक कार्य करती रहती हैं।''

श्याम ने ज़ोर देते हुए कहा, ''ये इंसान शहद तो चुरा ले जाएँगे, पर क्या वे मधुमक्खियों की प्रकृति और उनके काम करने की क्षमता को चुरा सकते हैं? नहीं! वे ऐसा नहीं कर सकते। ये मधुमक्खियाँ थोड़े ही दिनों में किसी और सुरक्षित जगह पर जाएँगी, अपना सारा कौशल और मेहनत फिर से लगाएँगी, और एक नया, बेहतर छत्ता बनाकर नया भंडार जमा कर लेंगी।''

श्याम ने अंत में राम को जीवन का सबसे बड़ा पाठ सिखाया, ''तुम्हें यहाँ यह समझना चाहिए, जो व्यक्ति अपने भीतर सच्चा कौशल, ज्ञान और अटूट मेहनत की भावना रखता है, वह अगर आज अपना धन, अपनी संपत्ति या अपनी कोई भौतिक वस्तु खो भी दे, तो भी वह चिंता नहीं करता। क्योंकि उसकी सबसे बड़ी पूँजी - उसका 'कौशल' - उसके पास सुरक्षित है। वह उस पूँजी के बल पर फिर से सब कुछ हासिल कर लेगा। मेहनत का फल चुराया जा सकता है, पर मेहनत करने की कला और इच्छाशक्ति कभी नहीं चुराई जा सकती।''

यह सुनकर राम ने सिर हिलाया। उसने शहद चुराने वालों को नहीं, बल्कि वापस काम में लगी मधुमक्खियों को देखा। उसके चेहरे पर अब निराशा नहीं, बल्कि एक गहरी समझ की शांति थी।

सीख - आपकी लगन और परिश्रम आपकी सबसे बड़ी और सच्ची संपत्ति हैं, जिनके बल पर आप जीवन में बार-बार उठ खड़े हो सकते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

चित्रकथा

श्रीराम और सुग्रीव की मैत्री

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

रावणासुर सीतादेवी का अपहरण करके ले गया। राम और लक्ष्मण दोनों सीता को ढूँढते हुए ऋश्यमूक पर्वत के पास पहुँच गये। पहाड के ऊपर से सुग्रीव ने उनको देखा। सुग्रीव ने हनुमान से...

1

2 हनुमान उधर देखो... सामने दोनों आदमियाँ घूम रहे हैं। मेरा शक है कि वे दोनों वाली के ही आदमियाँ होंगे।

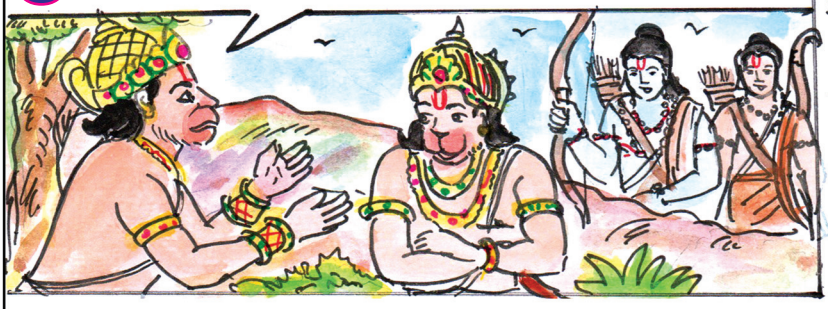

3 आप का शक सच नहीं है। राजा!

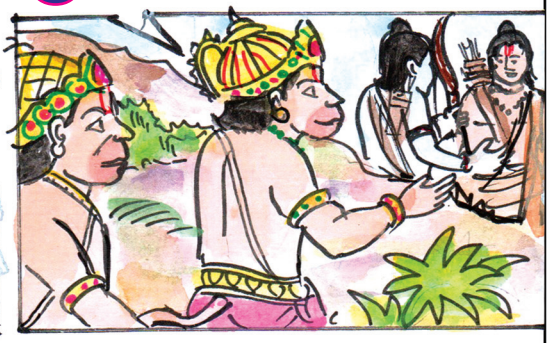

4 मारूती तुम अपना रूप बदलकर, उनके बारे में पता करके आओ।

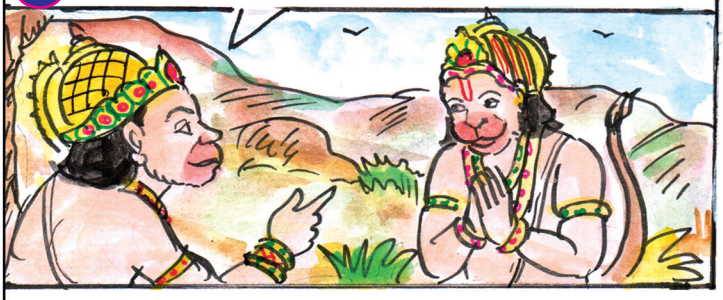

5 जी हाँ! वैसे ही महाराज!

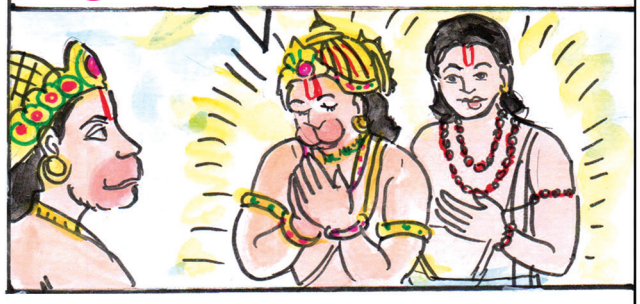

6 हनुमानजी संन्यासी के वेश में रामलक्ष्मण के पास गया।

7 आप कौन हैं? आप किस काम से यहाँ घूम रहे हो? आप को किसने भेजा?

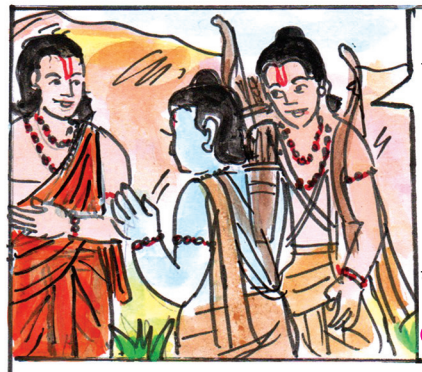

8 हमारा कोसल राज्य है। हम दोनों दशरथ महाराज के बेटे हैं। ये मेरे बडे भाई श्रीराम है। मेरा नाम लक्ष्मण है। मेरी भाभी सीतादेवी को राक्षसों ने अपहरण किया। उन्हें ढूँढते, ढूँढते हुए हम यहाँ तक आ गये।

9 हनुमान...

10 वन को क्यों आयें?

11 रामलक्ष्मण...

12 पिता की आज्ञा के कारण आये।

13 श्रीराम लक्ष्मण ने मारूती से पूछा कि तुम कौन हो?

14 पूजनीय महात्मा! मेरा नाम हनुमान है। मैं सुग्रीव का मंत्री हूँ। वानरों को राजा सुग्रीव है। वाली ने अधर्म ढंग से सुग्रीव को राजभ्रष्ट किया। सुग्रीव आप की मदद चाहते हैं।

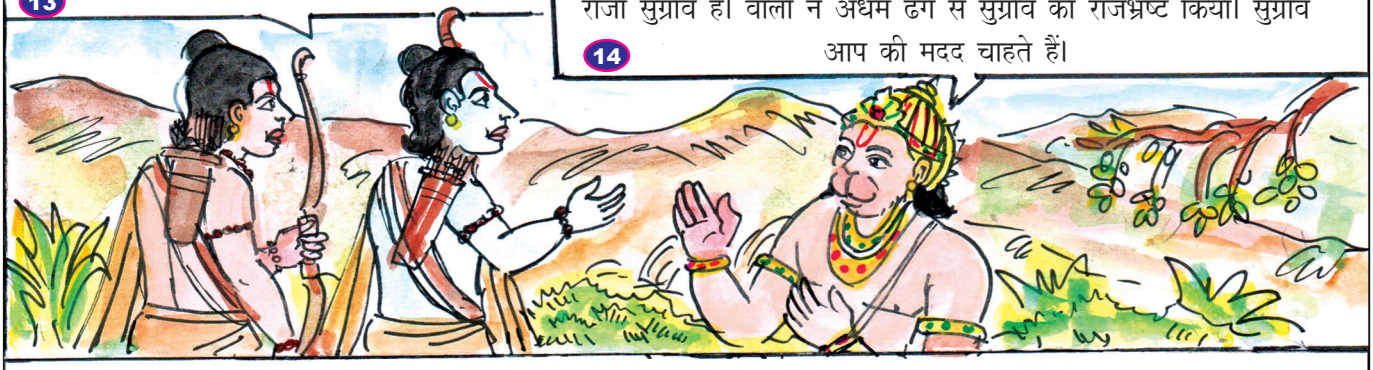

15 फिर हनुमानजी रामलक्ष्मण को सुग्रीव के पास ले गये। सुग्रीव ने उनका स्वागत किया।

16 श्रीराम! वाली ने मेरी पत्नी और राज्य को अपने अधीन में रख लिया। आप ही इस अधर्म को सुधारना होगा। मैं सीतादेवी को खोजूँगा।

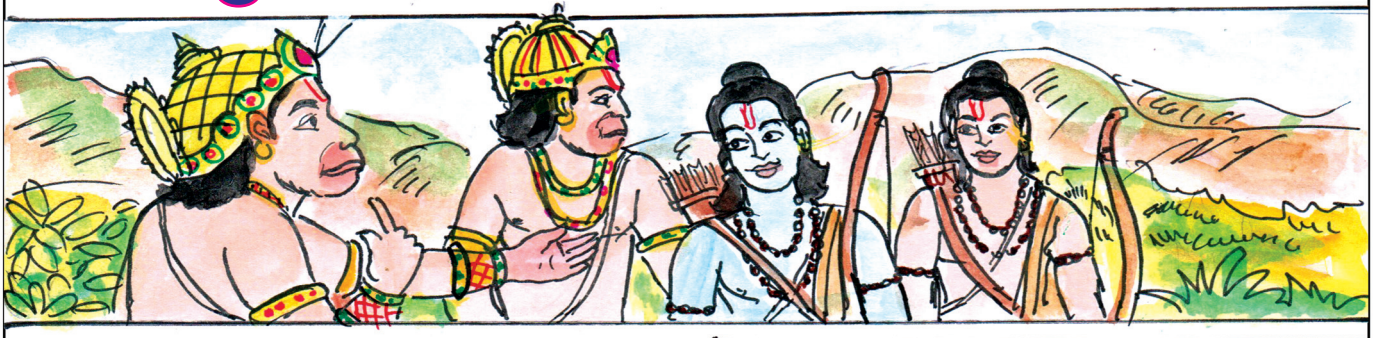

17 सुग्रीव की बातें सुनकर श्रीराम बहुत खुश हुए।

18 सुग्रीवा! वाली का वध करके धर्म की रक्षा करूँगा।

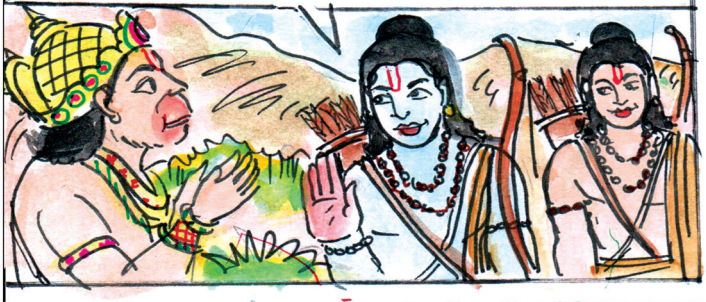

19 हनुमानजी ने शमी वृक्ष की लकडियों को जलाकर आग उत्पन्न किया। राम-सुग्रीव...

20 इस अग्नि साक्षी से हमारी दोस्ती में चार चाँद लगेगी।

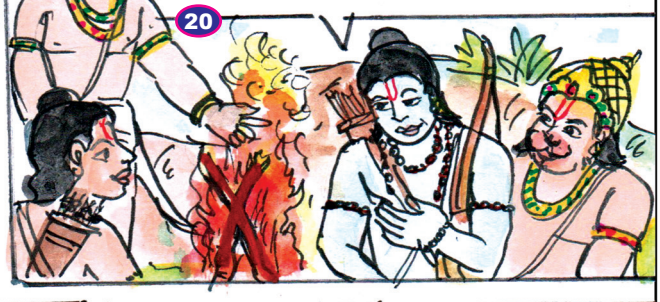

21 दोनों आपस में बातचीत कर लिए। हनुमानजी दोनों के बीच में गवाही बनकर खडे थे।

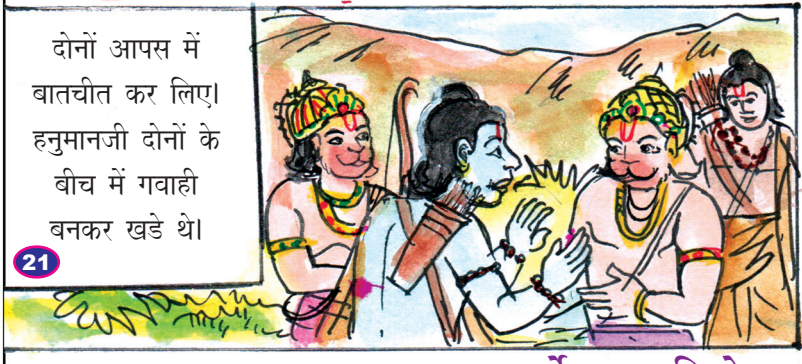

22 श्रीराम और सुग्रीव की मैत्री विश्व के लिए एक आदर्श बनेगी।

सर्वेजनाः सुखिनो भवन्तु!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजिनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं..

क्विज-44

1) कामदेव को किसने संहार किया?
ज)..
2) उगादि पर्व के दिन स्वीकारने वाले प्रधान व्यंजन का नाम क्या है?
ज)..
3) उगादि के दिन किस विषय के बारे में श्रवण करते हैं?
ज)..
4) चैत्रमाह शुक्ल तृतीया के दिन किसने आविर्भाव हुआ था?
ज)..
5) तिरुपति के नजदीक में स्थित नागुलापुरम् प्रांत में कौन सा भगवान ने विराजित हुए?
ज)..
6) श्रीरंगम् में विराजित देवी माँ का नाम क्या है?
ज)..
7) श्री राघवेंद्र स्वामी का माता-पिता का नाम क्या है?
ज)..
8) राम का प्रिय भक्त कौन है?
ज)..
9) सीता माता को किसने अपहरण किया?
ज)..
10) संन्यासी के वेष में राम-लक्ष्मण से किसने मुलाकात हुआ?
ज)..
11) राम का पिताजी का नाम क्या है?
ज)..
12) श्री राघवेंद्र स्वामी किस स्थिति में समाधि स्थिति को प्राप्त लिया?
ज)..
13) राम और श्याम के बीच का रिश्ता क्या है?
ज)..
14) तिरुमल में ध्रुवबेरम् नाम के जैसा किस मूर्ति को पूजा करते है?
ज)..
15) वाली को किसने वध किया?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

रंगों को भरिये क्या!

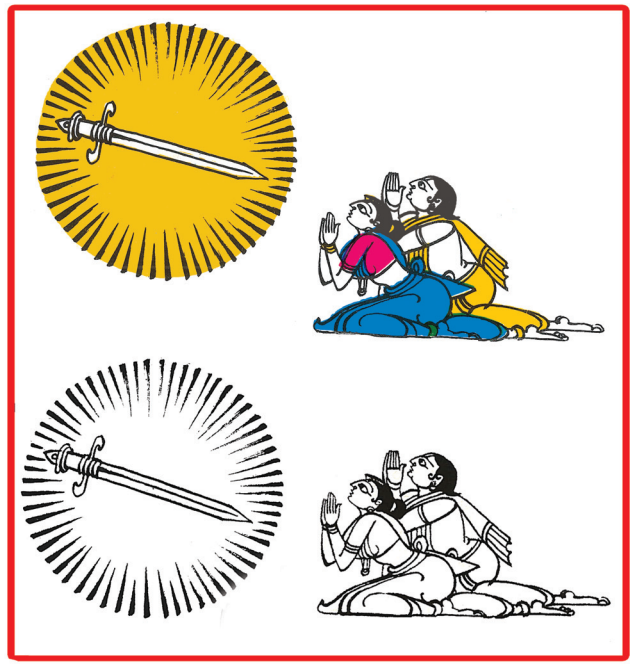

रामायण के सप्तकांड का संक्षिप्त विवरण

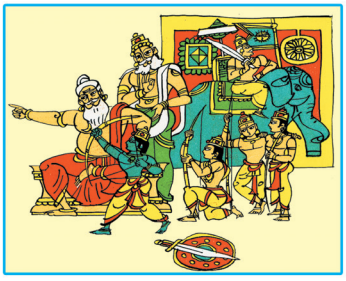

बालकांड

राम की जनन और बचपन; सीता का जन्म और राम से उनका विवाह।

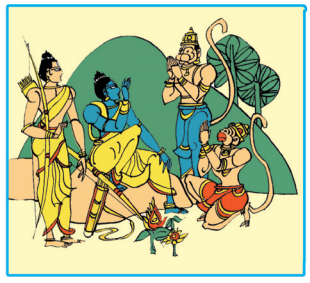

किष्किंदकांड

किष्किंदकांड में राम और हनुमान का मुलाकात।

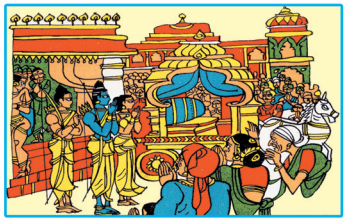

अयोध्याकांड

राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ, उनका वनवास और भरत की राज्यभार प्राप्ति।

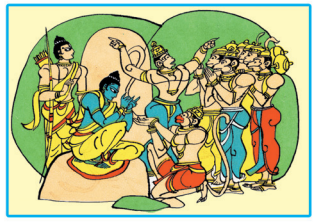

सुंदरकांड

हनुमान के वीरता के बारे में विस्तृत विवरण, माता सीता से उनकी मुलाकात का विवरण है।

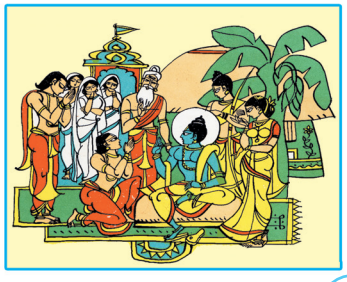

अरण्यकांड

राम और सीता एवं लक्ष्मण का वनवास। राक्षस राजा रावण द्वारा सीता का अपहरण।

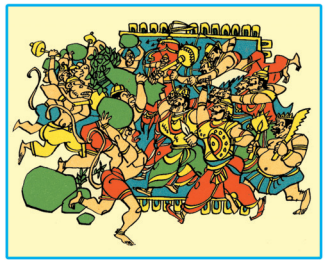

युद्धकांड

राम और रावण के बीच युद्ध, अग्नि परीक्षा, राम और सीता की अयोध्या वापसी।

उत्तरकांड

सीता का वनवास, लव-कुश और राम द्वारा धर्म का स्थापन।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

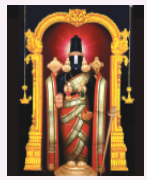

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : .....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
   .....
   पिनकोड .....
   मोबाइल नं .....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
   ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359,
2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. P.G. Dip. in JMC

तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
दि.16-03-2026 से दि.25-03-2026 तक

दिनांक	वार	दिन	रात
16-03-2026	सोमवार	...	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
17-03-2026	मंगलवार	ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
18-03-2026	बुधवार	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
19-03-2026	गुरुवार	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
20-03-2026	शुक्रवार	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
21-03-2026	शनिवार	पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव	गरुड़वाहन
22-03-2026	रविवार	हनुमद्वाहन, सा.वसंतोत्सव	गजवाहन
23-03-2026	सोमवार	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
24-03-2026	मंगलवार	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
25-03-2026	बुधवार	चक्रस्नान	ध्वजावरोहण

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-02-2026 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

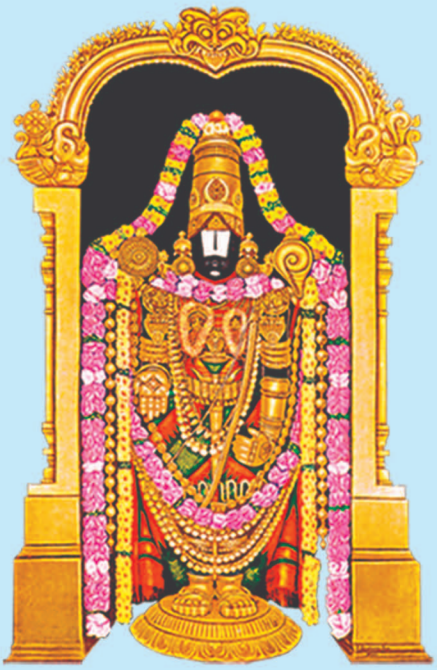

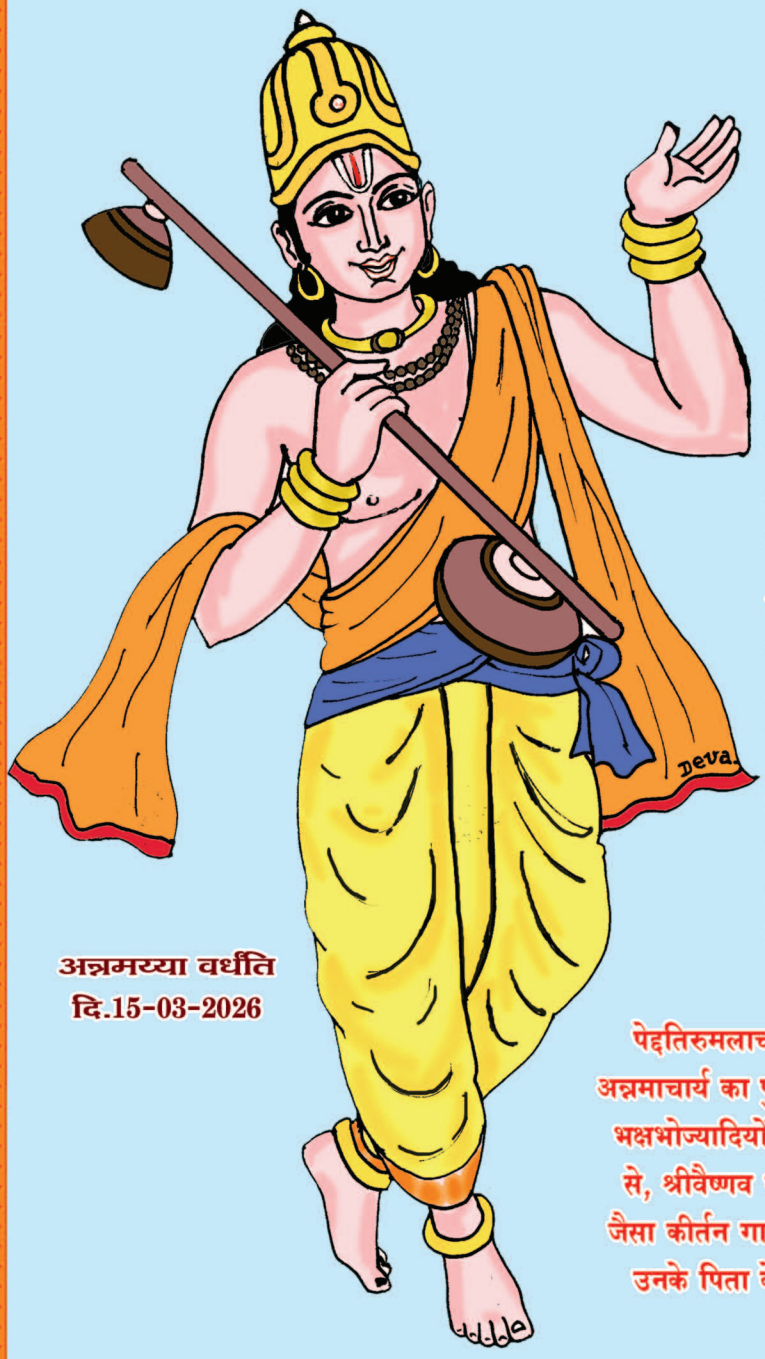

अन्नमय्या वर्धंति
दि.15-03-2026

दिनमु द्वादशि नेडु तीर्थदिवसमु नीकु
जनकुड अन्नमाचार्युड विद्येयवे || पल्लवि ||

अनंतगरुड़ मुख्युलैन सूरिजनुलतो
घन नारदादि भागवतुलतो
दनुजमर्दनुडैन दैवशिखामणितोड
वेनुकोनि यारगिंच विद्येयवे || दिनमु ||

वैकुंठान नुंडि यालुवारललोपल नुंडि
लोकपु नित्यमुक्तुललोन नुंडि
श्रीकांततोडनुन्न श्रीवेंकटेशुगूडि
यीकड नारगिंच निंटिकि विद्येयवे || दिनमु ||

संकीर्तनमुतोड सनकादुलेल्लबाड
पोंकपु श्रीवेंकटाद्रि भूमिनुंडि
लंके श्रीवेंकटगिरि लक्ष्मीविभुडु नीवु
नंकेल माइंटि विंदु लारगिंचवे || दिनमु ||

पेद्दतिरुमलाचार्य ने अपने पिता के प्रति अपार भक्ति प्रदर्शित की। अन्नमाचार्य का पुण्य तिथि फाल्गुन बहुल द्वादशी के दिन आचार्य जी को भक्षभोज्यादियों को समर्पण करके श्री लक्ष्मी सहित श्री श्रीनिवास जी से, श्रीवैष्णव भक्तांग्रिदासों से दावत खाने के लिए आ जाओ स्वामी जैसा कीर्तन गाया है। तिरुमलाचार्य ने आर्द्रता से गाया गया यह गीत उनके पिता के प्रति उनके भक्ति का एक जीता-जागता प्रमाण है।

- श्री पेद्दतिरुमलाचार्य
(आध्यात्मिक संकीर्तन, सं.2-151)